ओ३म्

वर्षम् - ११, अङ्कः - १४६

मार्गशीर्ष-पौषमासौ-२०७७
दिसम्बरमासः-२०२०

आर्ष-ज्योतिः

ज्योतिष्कृणोति सूनरी

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास का द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली में यज्ञ करते हुए श्रद्धालु...

प्रसारणकार्यालयः

श्रीमद्दयानन्दार्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुलम्, पौन्धा, देहरादूनम्

९४११९०६१०४, ८८१०००५०९६

arsh.jyoti@yahoo.in gurukulpondhadehradun www.pranwanand.org

डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई)
बृहत्त्रयी-सन्देश पर विचार व्यक्त करते हुए

बृहत्त्रयी-सन्देश पर
डॉ. सोमदेव शास्त्री जी के विचार सुनते हुए

चतुर्वेद पारायण यज्ञ का दृश्य

गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर ध्वजारोहण करते हुए

कैलेण्डर का लोकार्पण करते हुए आर्यजन

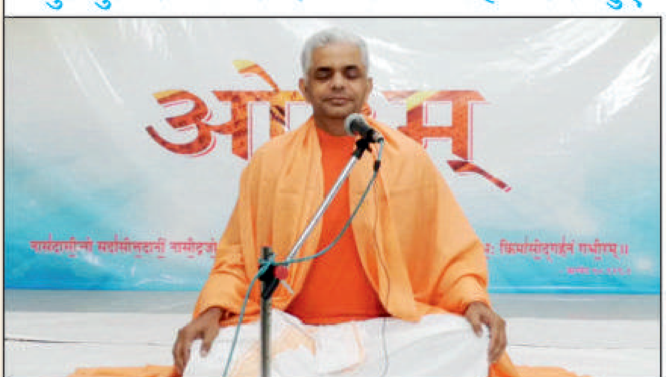

प्रणव योग साधना कराते हुए आचार्य योगेश शास्त्री

वेदपाठी-ब्रह्मचारी

❖ ओ३म् ❖

आर्ष-ज्योतिः

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास

का

द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

मार्गशीर्ष-पौषमासौ, विक्रमसंवत्-२०७७ / दिसम्बर-२०२०, सृष्टिसम्वत्-१,९६,०८,५३,१२१

वर्षम्-११ :: अङ्कः-१४६ मूल्यम्-रु. ५ प्रति, वार्षिकम्-५०

❖संरक्षकाः❖

स्वामी प्रणवानन्दः सरस्वती

कै. रुद्रसेन आर्यः

प्रो.देवीप्रसादत्रिपाठीवर्याः

श्रीगिरीश-अवस्थीवर्याः

❖परामर्शदातृमण्डलम्❖

डॉ. रघुवीरवेदालङ्कारः

प्रो. महावीरः

आचार्ययज्ञवीरवर्याः

श्रीचन्द्रभूषणशास्त्री

❖मुख्यसम्पादकौ❖

डॉ. धनञ्जय आर्यः

डॉ. रवीन्द्रकुमारः

❖कार्यकारी सम्पादकः❖

ब्र. शिवदेवार्यः

❖व्यवस्थापकाः❖

ब्र. आकाशार्यः

ब्र. त्रिजकिशोरः

ब्र. सुधांशुः

❖कार्यालयः❖

श्रीमद्दयानन्द-आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुलम्

दूनवाटिका-२, पौन्धा,

देहरादूनम् (उत्तराखण्डः)

दूरवाणी - ०९४११०६१०४,८८१०००५०९६

website: www.pranwanand.org

E-mail : arsh.jyoti@yahoo.in

विषय-क्रमणिका

विषयः	पृष्ठः
आर्य्याभिविनयः	२
सम्पादकीय	३
कविता-संग्रह	५

ब्र. निशान्त कुमार

प्रस्तुत अंक में गुरुकुल के ब्रह्मचारी निशान्त कुमार द्वारा रचित कविताओं का संग्रह प्रस्तुत किया जा रहा है। ब्रह्मचारी निशान्त वर्तमान में शास्त्री तृतीय वर्ष में अध्ययन कर रहे हैं। हम आशा करते हैं कि प्रस्तुत कविताओं का संग्रह पाठकों के हृदय को आह्लादित करेगा। आप अपने सुझावाओं से हमें अवगत अवश्य करायें... - सम्पादक

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशनतिथि-३ दिसम्बर २०२० :: डाकप्रेषणतिथि-८ दिसम्बर २०२०

आर्य्याभिविनयः

(१२)

ऋषिः- घौरः काण्वः। **देवता**-अग्निर्देवता। **छन्दः**-विराट् पथ्या बृहती। **स्वरः**-मध्यमः।

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः।

पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठ्य॥

-ऋग्वेद १/३६/१५

पाहि। नः। अग्ने। रक्षसः। पाहि। धूर्तेः। अराव्णः। पाहि। रीषतः। उत। वा। जिघांसतः। बृहद्भानो इति बृहत्ऽभानो। यविष्ठ्य॥

अन्वयः-

हे बृहद्भानो यविष्ठ्याग्नेः सभाध्यक्ष महाराज! त्वं धूर्तेरराव्णो रक्षसो नः पाहि। रिषतः पापाचाराज्जनात् पाहि। उत वा जिघांसतः पाहि॥

आर्याभिविनयः-

हे **(अग्ने)** सर्वशत्रुदाहकाग्ने परमेश्वर! **(रक्षसः)** राक्षस हिंसाशील दुष्टस्वभाव देहधारियों से **(नः)** हमारी **(पाहि)** पालना करो और रक्षा करो। **(धूर्त्तेरराव्णः)** कृपण जो धूर्त उस मनुष्य से भी हमारी **(पाहि)** रक्षा करो **(रीषत उत वा जिघांसतः)** जो मारने की इच्छा करता है **(बृहद्भानो यविष्ठ्य)** हे महातेज बलवत्तम! उन सबसे हमारी रक्षा करो॥

पदार्थः-

(पाहि) रक्ष **(नः)** अस्मान् **(अग्ने)** सर्वाग्रणीः सर्वाभिरक्षक **(रक्षकः)** महादुष्टान्मनुष्यात् **(पाहि)** **(धूर्तेः)** विश्वासघातिनः। अत्र धुर्वी धातोः बाहुलकादौणादिकस्तिः प्रत्ययः। **(अराव्णः)** राति ददाति स रावा न राव अरावा तस्मात्कृपणाददानशीलात्। **(पाहि)** रक्ष **(रीषतः)** हिंसकाद् व्याघ्रादेः प्राणिनः। अत्र **अन्येषामपि दृश्यत** इति दीर्घः। **(उत)** अपि **(वा)** पक्षान्तरे **(जिघांसतः)** हन्तुमिच्छतः शत्रोः **(बृहद्भानोः)** बृहन्ति भानवो विद्याद्यैश्वर्य्यतेजांसि यस्य तत्सम्बुद्धौ **(यविष्ठ्य)** अतितरुणावस्थायुक्तः॥

संस्कृताभिविनयः-

हे सर्वशत्रुदाहकाग्ने परमेश्वर! हिंसाशीलाद्राक्षसाद्दुष्टस्वभावाद् देहिनोऽस्मान् पालय रक्ष च। यो धूर्तकृपणस्तस्मान्नरादप्यस्मान् रक्ष। यो हन्तुमिच्छति हे महातेजबलवत्तम! तेभ्यः सर्वेभ्योऽस्मान् रक्ष॥

- शिवकुमारः, गुरुकुलपौन्धा, देहरादूनम्

कोई कितना ही करें, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती

सम्पादक की कलम से...

सिनेमा की दयनीय दृष्टि...

वर्तमान में देश के युवाओं की पहली पसंद सिनेमा है। सच्चा गुरु व मार्गदर्शक सिनेमा ही बनता जा रहा है, जिसकी छाप छोटे से लेकर अबालवृद्ध समस्त जनसमूह पर दिखायी देती है। यत्र-तत्र सर्वत्र ही सिनेमा की चर्चायें विस्तृत हो रही हैं। सिनेमा का मुख्य उद्देश्य सूचना का सम्प्रेषण तथा मनोरंजन है किन्तु आज इसका उद्देश्य किसी दूसरी ही दिशा को दिग्दर्शित कर रहा है। आज सिनेमा ने समाज-सच को सकारात्मक पक्ष में प्रस्तुत न करके उसके विकृतपक्ष को उजागर किया है। सामाजिक सरोकारों और समस्याओं के उपचारों से उसका दूर-दूर तक कोई लेना-देना प्रतीत नहीं होता। उनमें समस्याओं का जो समाधान दिखाया जाता है, उसने दर्शकों के मन में समाधान की स्थिति को भ्रमित करके उसे उलझाया है। फिल्मों का समाधान जिस 'सुपरमैन' में निहित है, उसका अस्तित्व ही संदिग्ध है। इस प्रकार समस्या सच होती है और उसका समाधान मिथ्या। फलस्वरुप फिल्में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाने की बजाय नकारात्मक भूमिका निभाने लगती है।

सिनेमा के माध्यम से अपना प्रसार-प्रसार तथा अपनी इच्छानुसार युवाओं तथा जनमानस को दिशा व दशा देकर दिग्भ्रमित करने का कार्य बहुत ही तीव्रता के साथ किया जा रहा है। प्रत्येक घर-परिवार में ऐसी स्थिति बनती चली जा रही है कि हर कोई कहने लगा है कि ये सिनेमाजगत्, मोबाईल आदि ने तो हमारे बच्चों को हमसे दूर कर ही दिया है और साथ-साथ हमारे आदर्शों को सदा के लिए ही भुला दिया है। वर्तमान में आने वाले चलचित्र (फिल्में) इसी कार्य को तीव्रता देने का असहनीय कृत्य कर रही हैं।

अभी कुछ समय पहले ही एक ऐसी फिल्म का प्रकाशन हुआ, जो लोगों की मानसिकता को प्रभावित करने वाली रही, यह फिल्म थी 'लक्ष्मी'। इसके नायक अक्षय कुमार को एक मुस्लिम युवक के रूप में दिखाया गया है और नायिका कियारा आडवानी के रूप में हिन्दू युवती को प्रदर्शित किया गया है। फिल्म प्रोड्यूसर शबीना खान है, जोकि अलगाववादी के रूप में जानी जाती रही हैं और कश्मीर की स्वतन्त्रता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहती हैं। इनके इस फिल्म बनाने के पीछे न जाने क्या उद्देश्य रहा होगा किन्तु कुछ तथ्य तो सीधे दिखायी दे रहे हैं। मुस्लिम युवक एवं हिन्दू युवती का प्रेम-प्रसंग पूर्वक भागकर घरवालों की अनेच्छा से विवाह दिखाया गया है, जिस आधार पर स्पष्ट होता है कि फिल्म में लव जिहाद का पूर्णपक्ष लिया गया है। हिन्दू लोगो की मानसिकता में यह जहर घोलने का प्रयास किया गया है कि जो मुस्लिम लड़के होते हैं, वे अपनी पत्नी को बहुत खुशी देते हैं, सदैव प्रसन्न रखते हैं।

सिनेमा जगत् की प्रायः सभी फिल्मों के समान इसमें रहीम चाचा को दयालु दिखाया गया है। और हिन्दू परिवार को निर्दयी दिखाया गया है। इसको

देखने के बाद समझ नहीं आता कि क्या रहीम चाचा, अब्दूल चाचा जैसे मुस्लिम लोग ही दयालु प्रकृति के होते है?

फिल्म में यहीं तक नहीं दिखाया गया है अपितु इससे आगे बढ़कर मुस्लिम इमामों को सर्वशक्तिमान, शक्तिशाली दिखाकर हिन्दूधर्म के धर्माधिकारियों व पुरोहितों को निम्नज्ञान वाला दिखाया गया है। फिल्मों में प्राय: ऐसा क्यों दिखाया जाता है?

सैंसर बोर्ड की जिम्मेदारी है कि सिनेमा के माध्यम से समाज को ऐसी चीजें दी जाये, जिससे समाज सुदृढ़ हो किन्तु ऐसा दिखायी नहीं देता। आखिर सैंसर बोर्ड कब अपनी जिम्मेदारी दिखायेगा?

सिनेमा को क्या हिन्दूधर्म की बुराईयां दिखाई देती हैं? कभी तनिष्क जैसी कम्पनियों के विज्ञापन में, तो कभी बॉलीबुड के गानें में, तो कभी वैबसीरिजों में ऐसे अभद्ररूप दिखाने का क्या प्रयोजन है?

अक्षयकुमार को तथाकथित देशभक्त बनाकर लोगों का मार्गदर्शक बनाया जाता है और फिर उसी मार्गदर्शक के माध्यम से जहर पिलाया जाता है। इन लोगों का उद्देश्य सीधी-साधी जनता को बहकाना है। लोग इनके उद्देश्यों से अनभिज्ञ रहते हैं और जिस कारण से हमारी आने वाली वर्तमान पीढ़ी धीरे-धीरे हमारी संस्कृति, सभ्यता व परम्पराओं को हीनभावों से देखने लग रही है।

मैं हिन्दू-मुस्लिम के विवाद को लेकर यह सब कुछ नहीं लिख रहा। मैं तो यह अवगत कराना चाहता हूँ कि आज मुस्लिम समाज की जनसंख्या २० करोड़ जनसंख्या होते हुए ही देश को तोड़ने का कार्य कर रही है तो भविष्य में जब इनकी संख्या ७५ प्रतिशत से अधिक होगी तब क्या होगा? आज हम अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकते हैं, अपने अधिकारों की बात कर सकते हैं किन्तु आने वाले निकट भविष्य को आप निश्चित ही ज्ञात कर सकते हैं। इसलिए आज आवश्यकता है कि हम अपने विचारों को सुदृढ़ करें। अपने बच्चों को जो आपकी भावी पीढ़ी है, उसे अभी से ही अच्छे चरित्र की शिक्षा देकर उच्चनागरिक बनाने का यत्न करना चाहिए।

सिनेमाजगत् के माध्यम से देश की दिशा बदलने का यह दयनीय व्यवहार हो रहा है, यह सर्वथा असहनीय है। जनमानस प्रबुद्ध है, सोचने-समझने की क्षमता तीव्र है, सही-गलत का निर्णयकर्ता आप स्वयं हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा था कि 'चित्र की नहीं चरित्र की पूजा करो।'

हे युवाओं! फिल्मों को देखकर अपने महापुरुषों के बताये मार्ग से पथभ्रष्ट न हो जाना। सावधान रहें, सतर्क रहें, क्योंकि आपसे ही देश की आन-बान-शान सुरक्षित है।

अनेक निष्कर्षों के पश्चात् ज्ञात होता है कि सिनेमा कभी किसी को सद्चरित्र प्रदान नहीं कर सकता अपितु अच्छा साहित्य ही आपके जीवन को बदल सकता है। इसीलिए आवश्यक है कि हम अपने जीवन में वेदोक्त साहित्य को अपनायें और वर्तमान सिनेमाजगत् से सावधान रहकर समाज व राष्ट्रनिर्माण में योगदान दें।

पत्रिका के इस अंक में गुरुकुल पौन्धा में अध्ययनरत् ब्रह्मचारी निशान्त कुमार की स्वरचित कुछ कवितायें उत्तम साहित्य के रूप में आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं। ब्रह्मचारी को आप सभी पाठकवृन्दों का आशीर्वाद प्राप्त हो, इन्हीं भावों के साथ...

-शिवदेव आर्य,
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून
मो.-८८१०००५०९६

कविता-संग्रह

❑ निशान्त कुमार...✍

१. मेरा गुरुकुल (कविता) :: छन्द - कवित्त

हिमाच्छादित पर्वतवधु के जलसिञ्चित पावन पद पर,
निर्झर-झरझर कलकल करती नीमी नदी के नीरव तट पर।
कानन कुञ्जित कोकिल कलरव कर्णों में आता पग-पग पर,
मेरा गुरुकुल संस्थापित है दून घाटी के सुन्दर सर पर॥

हरित हरियाली की सुन्दर चादर फहरी है चहुँ ओर जहाँ,
शीतल मन्द सुगन्ध पवन का साया है चहुँ ओर जहाँ।
वेदनिष्ठ वटुकवरों का रव गुञ्जित होता यज्ञ वेदी पर,
मेरा गुरुकुल संस्थापित है दून घाटी के सुन्दर सर पर॥

सुन्दर साल सुशोभित शोभा शोभित होती हर-क्षण हर-पल,
मधुर मिठास भरा मृदु मधु जल निस्सारित होता है कलकल।
तृण भक्षण करके गौ-कुल रम्भाता चहुँ ओर जहाँ पर,
मेरा गुरुकुल संस्थापित है दून घाटी के सुन्दर सर पर॥

आम्रसमूह के सुन्दर तरु से आच्छादित है भूमि जो,
सूर्यदेव की किरण समूह से आप्लावित है भूमि जो।
शस्त्रारक्षित शास्त्रों का पाठन होता है चहुँ ओर जहाँ पर,
मेरा गुरुकुल संस्थापित है दून घाटी के सुन्दर सर पर॥

कानों में हैं अमृत घोले कोकिल, शुक और मोर जहाँ,
झिंगुर झङ्कृत ताल से मिश्रित वानर समूह का शोर जहाँ।
वन देवी की कृपा से पावन होता पर्यावरण जहाँ पर,
मेरा गुरुकुल संस्थापित है दून घाटी के सुन्दर सर पर॥

शस्त्र-शास्त्र के ज्ञाता होकर मुदित हैं होते विप्र जहाँ के,
कार्यक्षेत्र में अर्जुन के सम धीरताधारी वटुक जहाँ के।
स्वर्णिम ध्वज फहराता इसका आर्यजनों के हृदिमण्डल पर,
मेरा गुरुकुल संस्थापित है दून घाटी के सुन्दर सर पर॥

जिसके पावन यश से गुञ्जित होता है त्रिभुवन सारा,
'निशान्त' के सम जो तम का हर्ता मेरा ये गुरुकुल प्यारा।
स्वर्ग-सी सुन्दर सुरभूमि जो देवों के सम वटुक यहाँ पर,
मेरा गुरुकुल संस्थापित है दून घाटी के सुन्दर सर पर॥

२. भारतीय योद्धा (कविता) :: छन्द - कवित्त

घनघोर घटा के गर्जन से जो युद्धक्षेत्र में छाये थे,
अरि-मस्तक को रौंद-रौंदकर शत्रु वीर छकाये थे।
आज दिगन्त में गूँज रहा उन वीर जनों का वन्दन है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

जो बरछी, तीर, कटारों पर छाये भालों की धारों पर,
जो इंच कटे पर डटे रहे झेलम के रक्त किनारों पर।
'पौरस' के वीर पराक्रम से भारत की मिट्टी चन्दन है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

जो युद्ध किया घन-घोर किया और विश्वविजेता मोड़ दिया,
भारत के नक्शे में हिन्दुकुश पर्वत उसने जोड़ दिया।
'चन्द्रगुप्त' का त्रिभुवन-व्यापी डोल रहा यशस्यन्दन है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

जिन्होंने सारी दुनिया रौंदी भगवा ध्वज के तले होकर,
बड़े-बड़े सम्राटों के सर गिरे श्रीविहीन होकर।
भारत वीरों की तलवारों से बढ़ता सबका रुन्दन है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

शक-हूणों के दुर्धर्ष दल का जिसने किया सफाया था,
अवनि तल पर उन शूरों का शौर्य-सिन्धु भी छाया था।
'समुद्रगुप्त' के समर के आगे शत्रु करता क्रन्दन है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

जो पृथ्वी का पृथ्वीपुत्र था जिसने गजनी हिलाया था,
गोरी के उन्नत मस्तक को जिसने भू में मिलाया था।
शूरवीर उस 'पृथ्वीराज' का ये जग करता वन्दन है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

जो सूर्यवंशी मेवाड़ पुत्र जो अङ्गारों का शोला था,
रण में जिसने मुगल सैन्य को तलवारों पर तोला था।
तप:पूत वो 'महाराणा' इस मातृभूमि का नन्दन है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

जिसने स्वराज का घोष किया निजदेश की मुक्ति कराने को,
जिसने शाही को रण में धोया निज समर-शौर्य दिखलाने को।
'शेर शिवाजी महाराजे' का स्वर्णिम प्रण ये कुन्दन है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

आँधी भिड़े तूफान हैं हम तूफान अड़े तो आग के दरिये,
सौगन्ध शिवा की खाते हैं हम जिसमें दम हो हमसे लड़िये।
उस 'बाजीराव' समर-विजयी का गूँज रहा रण गुञ्जन है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

अपनी झांसी नहीं दूँगी वह बिजली जैसी कड़क पड़ी,
सत्तावन के समरकुण्ड में मर्दानी वह कूद पड़ी।
'लक्ष्मीबाई' के प्रण का गुञ्जन करता ये समराङ्गण है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

शिशिर के शुष्क प्रभात में जो रक्त की होली खेल गया,
तड़-तड़ करती तड़ित के सम जो शत्रुदलों पर डोल गया।
'चन्द्रशेखर' की अविचल जय का व्यापक मेरा वन्दन है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

शूर अनेकों इस माता के रक्षण में बलिदान हुए,
इस देश-धर्म की रक्षा में ही जिनके नाम महान हुए।
'बिस्मिल, भगत, सुखदेव, राजगुरु' जिनके चरण भी कुन्दन हैं,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

कुदरत में थी चमक-दमक व जल भी था वहाँ बरस रहा,
नहीं हटा वो टाइगर हिल से शत्रु का वहाँ जोर रहा।
'विक्रम बत्रा' के पावन खूँ का कारगिल करता वन्दन है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

आज खड़े सीमाओं में जो रखवाले देश के बने हुए,
जो सदा ही युद्धरत रहते हैं शत्रु के खूँ में सने हुए।
उन भारत वीर सपूतों का देश ये करता वन्दन है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

त्याग, समर्पण और सत्य से अपना देश सजाएंगे,
हम कलियाँ हैं फूल बनेंगे मिलकर खुशियाँ लायेंगे।
तपस्थली है मेरा देश ये माटी इसकी चन्दन है,
भारत का कण-कण कहता है उन वीरों का अभिनन्दन है॥

३. वन्दे भारतमातरम् (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

परमेश ने तुझको हमारी माँ बनाया धर्म से,
वात्सल्य की प्रतिमा है भारत भू सदा ही कर्म से।
तू ही हमारी मातृ-भू तेरे ही चरणों में रमें,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

देवी पुरंध्री तू सदा सौन्दर्य भूमि यौवना,
देवों के गण करते यहाँ बस आपकी ही कामना।
प्रेम से भरपूर तू सौभाग्य तुझको माँ कहें,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

स्याही समुद्रों की बनें हो लेखनी सुरवाटिका,
कागज बनें सारी मही हो वाग्देवी लेखिका।
फिर भी तेरे अहसानों का वर्णन अधूरा ही रहे,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

अवनि-तलों में तेरे सम रमणीय न कोई देश है,
हिम से भरा सौन्दर्य वाला न कही पे वेष है।
सुरलोक से है दिव्य तू जगती ये सारी है कहे,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

हिम से भरा हिमपुत्र भी तेरा तो उज्ज्वल शीश है,
तेरे चरणकमलों को धोता सिन्धु भी निर्भीक है।
सिन्धु, शतद्रु, ब्रह्म, भागीरथी सदा तुझमें बहें,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

कलकल धवल जल से शोभित तेरा तन है मेरी माँ,
स्वर्णकमलों से सुशोभित तेरा मन है मेरी माँ।
हे मेरी माँ रत्नगर्भा! वन्दन ये तेरा हम करें,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

जब तक रहेगा चाँद सूरज तब तक रहेगा देश ये,
शस्य श्यामल भी रहेगा मेरी माँ का वेष ये।
सारे जहाँ की देवी तू वन्दन ये तेरा जग करे,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

उत्तर में है दुर्भेद्य हिम का घेरा जो उत्तुङ्ग है,
बाकी दिशाओं में सदा ही व्याप्त सिन्धु श्रृंग है।
उर्वरा भूमि सुगन्धित पुष्प से शोभित रहे,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

जापान, अमेरिका तथा यूरोप से तुलना नहीं,
रोम ना था ग्रीक ना बस स्वर्ग-सी मेरी महीं।
वीरों की प्रसवा तू ही माँ तेरे ही चरणों में बसें,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

सीरिया और चाइना का भी उदय था न हुआ,
दर्शन तथा वेदों का उद्भव तब था भारत में हुआ।

इतिहास का दीपक भी ना अब अन्धयुग भेदन करें,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

होम की ज्वाला से जलता मन्त्रों से अभिषिक्त है,
ऐसे ही दिव्य प्रदेश से सारी ही सृष्टि रिक्त है।
ऐसे अलौकिक देश से सारी ही जगति तृप्त है,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

वेदों के ज्ञाता ऋषि-मुनि और श्रेष्ठ जन हैं आपके,
ऋग्वेद इस भूमि का है चारों ही वेद हैं आपके।
वशिष्ठ आंगिरस भृगुसम तेरी वसुधा के रहे,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

न्याय तथा सांख्यों के कर्ता तेरे कण-कण में बसे,
आर्यभट्ट भास्कर के जैसे पूतों से तू ही सजे।
कोकिल के सम सप्तम स्वरों का गान भी तू ही करे,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

इन महापुरुषों का वर्णन तो सिर्फ इक भूमिका,
श्रेष्ठजन इतने यहाँ कि सैकड़ों भरें पुस्तिका।
इस भारती सिन्धु में ऐसे सैकड़ों मोती भरे,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

राणा प्रताप व पेशवा बाजी, शिवाजी वीर हैं,
बुन्देलों की तलवार है और राजपूती धीर है।
तेरे हजारों वीर माँ तव तेज से ये जग भरे,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

योद्धाओं का वर्णन करें या हम करें विद्वानों का,
काव्यों तथा शास्त्रों में वर्णित है तेरी ही महानता।
देशभक्त व देशप्रेमी तेरा ही वर्णन करें,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

तू ही सदा सुभगा, सुवर्णा और सुजला रत्नधा,
हे ऋतुमति! हे वसुमति! तू ही पुरंध्री दिव्यदा।
हे विविधकुसुमा! तेरे हित प्राण का अर्पण करें,
निश्चय से वन्दे मातरम् का रव सदा ही हम करें॥

४. आर्यावर्त्त की श्रेष्ठता (कविता) :: छन्द - कवित्त

अपवर्ग जो भू-लोक का नरसृष्टि का आधार है,
सब ओर से फैला हुआ उत्कर्ष का विस्तार है।

जिसकी प्यारी संतानों से शासित है ये जग सारा,
आर्यावर्त्त के पावन पग में आज गिरा संसार ये सारा॥

स्वर्ग-सी सुन्दर सुरभूमि जो जिसके निवासी आर्य हैं,
सारी दुनिया में कलाकौशल के जो निष्णात आचार्य हैं।
जिनके आलोक से आलोकित होता है त्रिभुवन सारा,
आर्यावर्त्त के पावन पग में आज गिरा संसार ये सारा॥

जिसने सारी दुनिया को है सद्विद्या का ज्ञान दिया,
वेदमन्त्रों और उपनिषदों का हमने था यहाँ गान किया।
जिनकी अविचल जय के आगे झुका हुआ भू-मण्डल सारा,
आर्यावर्त्त के पावन पग में आज गिरा संसार ये सारा॥

तन-मन अलौकिक है हमारा धीरता विख्यात है,
विश्व के हम ज्ञानदीपक आज सबको ज्ञात है।
हम शिक्षक सम्पूर्ण जगत् के जगत् है सारा शिष्य हमारा,
आर्यावर्त्त के पावन पग में आज गिरा संसार ये सारा॥

जब विश्व था शैशव दशा में ज्ञान-दीपक खोजता,
उस समय हम पा चुके थे सब विषयों में प्रौढ़ता।
आज भी भारत के आगे बुद्धू अवनि-तल सारा,
आर्यावर्त्त के पावन पग में आज गिरा संसार ये सारा॥

जिसके वीरों की खड्गों ने सारी वसुन्धरा छानी,
यश-पताका इस भारत की लहरायेंगे हम ये ठानी।
उनके समर-शौर्य के आगे पानी भरता जग सारा,
आर्यावर्त्त के पावन पग में आज गिरा संसार ये सारा॥

बढ़े चलो हे भारतवासी! विजय अभी अधूरी है,
शौर्य, पराक्रम ज्ञान की गंगा भरनी तुमको पूरी है।
'निशान्त' की इच्छा बलबुद्धि से गूँजे ये भारत प्यारा,
आर्यावर्त्त के पावन पग में आज गिरा संसार ये सारा॥

५. आर्यावर्त्त की वर्त्तमान दशा (कविता) :: छन्द - कवित्त

जिसने सारी दुनिया हिला दी दिव्य अलौकिक ज्ञानों से,
सारी धरती छेदी जिसके वीरों ने अपने बाणों से।
आज धरा में अपमानित है अपने पुरखों की ख्याति,
शोणित से है सनी हुई अपनी वसुधा की छाती॥

अवलोक के जिनकी चर्या को सारी जगती थी सभ्य हुई,
जिस देश की धरती को छू-करके भाग्य की रेखा बुलंद हुई।
आज उसी की संतानों को चुगली झूठ फरेबी भाती,
शोणित से है सनी हुई अपनी वसुधा की छाती॥

वेद-शास्त्रों का जहाँ पर नित्य होता पाठ था,
कर्मणा जातिप्रथा थी हर जगह पर ठाठ था।
देशभक्ति छिन्न-भिन्न अब बड़ी हुई है सबसे जाति,
शोणित से है सनी हुई अपनी वसुधा की छाती॥

धन के बल पर जिसने सारी दुनिया की थी भूख मिटाई,
भूख से व्याकुल संतानों का करुण भरा स्वर देता सुनाई।
दारिद्र्यता दुर्धर यहाँ पर लालची सबको बनाती,
शोणित से है सनी हुई अपनी वसुधा की छाती॥

गायों की हिंसा हो रही गौ-पूजकों के देश में,
घी-दूध दुर्लभ हो रहा अब भरे सब क्लेश में।
पशुओं की बलि को चढ़ाते आज हमको लाज न आती,
शोणित से है सनी हुई अपनी वसुधा की छाती॥

धनिकों ने धन के लालच में आज करी मनमानी है,
दरिद्रों को न कौड़ी देंगे उन्होंने तो यह ठानी है।
करते करोड़ों अपव्यय पर दान प्रथा न उनको आती,
शोणित से है सनी हुई अपनी वसुधा की छाती॥

हे ईश! अब इस देश का आधार हो बस आप ही,
हममें दया करुणा का सागर शीघ्र भर दो आप ही।
'निशान्त' की है प्रार्थना हर वक्त तेरी याद आती,
शोणित से है सनी हुई अपनी वसुधा की छाती॥

६. उत्तिष्ठ भारत! (कविता) :: छन्द - कवित्त

हे भारती के पुत्र जागो बहुत तुम अब सो चुके,
आलस्य निद्रा में पड़े तुम निज भाग्य को अब खो चुके।
आलस्य में डूबे हुए तुम विश्व ने तुमको पछाड़ा,
तुम बढ़ोगे तो बढ़ेगा देश ये प्यारा हमारा॥

हे ब्राह्मणों निज बुद्धिबल से तुम प्रकाशित हो सदा,
बनकर सरस्वतीपूत तुम दो देश को विद्या सदा।
होता अलौकिक तेज से तेजस्वी भारत का सितारा,
तुम बढ़ोगे तो बढ़ेगा देश ये प्यारा हमारा॥

शत्रु के हृत्पत्र पर लिखें हमारे वीर जय,
प्रचण्ड दुर्धर युद्ध में बनते रहे वो सदा अभय।
दुर्जेय काल योद्धाओं के रण से धधके ये दिगन्त सारा,
तुम बढ़ोगे तो बढ़ेगा देश ये प्यारा हमारा॥

व्यापार को पुरुषार्थ से निज तुम संभालो आप ही,
खुशहालियाँ भर दो जगत् में वैश्यवर्गों आप ही।
उत्पाद ऐसा तुम रचो निर्यात हो वह माल सारा,
तुम बढ़ोगे तो बढ़ेगा देश ये प्यारा हमारा॥

पैरों के सम थामे रहो तुम राष्ट्ररूपी देह को,
शूद्रकर्मों के बिना न प्राप्त हो यश गेह को।
पुरुषार्थ से ही अब तुम्हारे व्याप्त अवनितल सारा,
तुम बढ़ोगे तो बढ़ेगा देश ये प्यारा हमारा॥

हे ईश! तू हम भारतीयों में प्रेम के सद्भाव दे,
मिलकर परस्पर सब रहें प्रीत का न अभाव दे।
हमारे गुण अवलोक लजाकर नतमस्तक हो जग सारा,
तुम बढ़ोगे तो बढ़ेगा देश ये प्यारा हमारा॥

व्यापार, बुद्धि, वीरता में हम बने सबसे बड़े,
सब चिह्न हमारी उच्चता के दिखते रहे सबको खड़े।
'निशान्त' की अभिलाषा है ईश्वर भारत बने आँखों का तारा,
तुम बढ़ोगे तो बढ़ेगा देश ये प्यारा हमारा॥

७. राष्ट्रनायक (कविता) :: छन्द - विधता मिलिन्द पाद

अनोखी बात माँ तेरे निराले प्रेमबंधन में,
कि लड़कर दुश्मनों से वो देश उद्धार करते है।
न होती टेर जो तेरी देश का क्या हश्र होता,
इसी से वीर जन दिन रात शत्रु पे वार करते है॥

कि रगड़ा था सिकन्दर को वीर पौरस ने झेलम में,
कि सन-सन गूंजते भालों और तीरों की लहरों में।
नमन करता है भारत भी आज उन शूरवीरों का,
जिन्होंनें देह थी त्यागी महासमरों के शहरों में॥

कभी बिस्मिल कभी गुरूराज कभी सुखदेव जैसे वीर,
यहाँ आजाद और रोशन यही पुकार करते हैं।
हमें तू सींचने दे खून से वो पंथ आजादी का,
जगत मे हम गुलामी का यही उपचार करते है॥

बहादुर वीर शास्त्री का यहाँ तो बोलबाला है,
कि वीरता से जो ऊँचा ही माँ का भाल करते हैं।
कि राणा ने सिखाया तुम न झुकना शत्रु के आगे,
शिवाजी खुद के मुख से भी यही उच्चार करते हैं॥

ऋषिवर ने बताया कि स्वराज ही सबसे अच्छा है,
कि गंगाधर इसे तो ही जन्म अधिकार कहते है।
कि महर्षि ने बचाया देश को तो नाना अनर्थों से,
मगर कुछ मूर्खजन उनकी न जय जयकार करते है॥

कि भगत सिंह और बटुकेश्वर है भारत माँ के वीर सपूत,
कि बहरों को सुनाने वो बम का काण्ड करते है।
कहा कौटिल्य ने था दुष्ट को है दुष्टता भाती,
कि उसको मानकर न हम आज हर वार सहते हैं॥

कभी खुदीराम कभी चाकी कभी करतार जैसे शूर,
जो भारत माँ की आजादी को लेकर फाँसी चढते हैं।
न है सम्मान न पूजा आज उन वीर पूतों का,
मगर तुम न रुको यारों हमेशा वो ही कहते हैं।

कभी इकत्तर का युद्ध तो है कभी पैंसठ का झगड़ा है,
बताया शूरवीरों ने कि भारत तुमसे तगड़ा है।
कहा बेटा लड़ेगा बाप से तो पानी माँगेगा,
यहाँ तो हम शत्रुओं का हाल बेहाल करतें है॥

कभी कुलदीप कभी हनुमत कभी हेमराज जैसे वीर,
जो अपनी जान ही कुर्बान सीमाओं में करतें है।
कहा माँ ने लजाना न तू बेटा मेरा दूध,
चाहे लड़कर ही मर जाना मगर तुम हार मत खाना॥

कि सियाचीन में खड़ें है वीर करतें देश की रक्षा,
कि दूजा काम न उनको आज लगता है यहाँ सच्चा।
कि हिम के बीच है धँसते और लड़ ते दुश्मनों से वो,
कि ऐसे पूतों के दम पर है मेरा देश आज अच्छा॥

८. भारत की दुर्दशा (कविता) :: छन्द - कवित्त

कर्णधार वो इस धरणी के भूखों से नित मरते हैं,
माँ की छाती चिपक चिपक कर रव रोटी का करते हैं।
आज भारत के कण-कण में है भूख गरीबी लाचारी,
फिर भी शान से कहते हैं हम मिटती नहीं हस्ती हमारी॥

पैदा होते झुग्गी में वो पगदण्डी में मरते हैं,
भूखे पेट करते मजदूरी ठण्डी आहें भरते हैं।
आजादी के स्वरूप में पाई भारत भूमि ने बेकारी,
फिर भी शान से कहते हैं हम मिटती नहीं हस्ती हमारी॥

जिसने सबको कपडा पहनाया वो भी नंगा फिरता है,
जिसने सबको अन्न खिलाया वो भी भूखा मरता है।
देश विरोधी नीति से है सबका जैसे हाल भिखारी,
फिर भी शान से कहते हैं हम मिटती नहीं हस्ती हमारी॥

जिसकी पताका सदियों फहरी दुश्मनों के देश में,
पतन अब इसका इस कदर है सब हुए अब क्लेश में।
भारत माँ ऐसी हुई जैसे अभागिन हो नारी,
फिर भी शान से कहते हैं हम मिटती नहीं हस्ती हमारी॥

बेसहारी है प्रजा और बेसहारा देश है,
चिन्ता का सागर है यहाँ और सुख भी नि:शेष है।
चोर उच्चकों से भरी है अपनी वसुन्धरा सारी,
फिर भी शान से कहते हैं हम मिटती नहीं हस्ती हमारी॥

साँस है बाकी बची बस मृत है मेरा ये वतन,
तेज शौर्य वीरता से लुप्त है ये मेरा चमन।
शेरों के इस देश पर आज गीदडों का झुण्ड भारी,
फिर भी शान से कहते हैं हम मिटती नहीं हस्ती हमारी॥

हे आर्यों इस देश को अब तुम सम्भालों कर्म से,
खुशियाँ भरो तुम नौजवाँ यहाँ व्याप्त करके धर्म से।
तुम उठोगे तो उठेगी आज ये वसुधा हमारी,
फिर कहेंगे शान से हम मिटती नहीं हस्ती हमारी॥

९. उत्तिष्ठ भारत (कविता) :: छन्द - कवित्त

उठों युवाओं जगो देश की तरूणाई ये कफन न हो,
भारत माता के सपने भी चौराहों पर दफन न हो।
भारतीय संस्कृति गुमसुम-सी आज तुम्हें पुकार रही है,
खड़ी है बेबस भारत माता तुम्हें निहार रही है॥

युवा शक्ति खड़ी हो देश की बदलेगा ये जग सारा,
जन गण मन का नारा भी गूंजेगा हर ओर हमारा।
हिला कर रख दों सारी दुनिया जो तुम्हें धिक्कार रही है,
खड़ी है बेबस भारत माता तुम्हें निहार रही है॥

तुम उठोगे अगर जहाँ में तो पर्वत शीश झुकाएगा,
तुमसे टकराकर सिन्धु भी क्षण में काफूर हो जायेगा।
थम जाएगी विषधर नागिन जो जहर निकाल रही है,
खड़ी है बेबस भारत माता तुम्हें निहार रही है॥

परिचय दो निज शक्ति का तुम धरती उलट पलट कर डालो,
देश के हित में जो भी रोड़ा उसको भस्म तुम कर डालो।
खून से अपने रण को भर दो शत्रुजिह्वा ललकार रही है,
खड़ी है बेबस भारत माता तुम्हें निहार रही है॥

रेगिस्तान भरेगा जल से बँजर भी फसल उगायेगा,
सिन्धु भरेगा मीठे जल से पर्वत मोम बन जायेगा।
युवाओं सम्भालों अपनी ताकत कलम यें चिंघाड़ रही है,
खड़ी है बेबस भारत माता तुम्हें निहार रही है॥

हे युवाओं! नशे, जुए की लत को अब तुम दूर करों,
इस माता को धन वैभव से अब ये तुम भरपूर करो।
चकित हो जाए वो सारी धरती जो छाती तान रही है,
खड़ी है बेबस भारत माता तुम्हें निहार रही है॥

शत्रुलहू से गीली अपनी सारी धरती को कर दो,
जो भी कोई आँख उठाये उसे रगड़ कर धर दो।
उस दुनिया का दिखा दो ताकत जो कायर मान रही है,
खड़ी है बेबस भारत माता तुम्हें निहार रही है॥

आह्वान को मेरे भारतवीरों हृदय के अन्दर धार लो तुम,
वीरता और धीरता से धनवैभव से पार लो तुम।
करों उद्धार मातृभूमि का जो तुम्हें पुकार रही है,
खड़ी है बेबस भारत माता तुम्हें निहार रही है॥

१०. अमर शहीद (कविता) :: छन्द - कवित्त

धधक-धधक हे समर की ज्वाला रव से गूंजे नभ सारा,
जिसमें समर में सबको रगड़ा वो चमके भारत प्यारा॥

जो आँधी नदी उफानों में कूदे बर्फीले तूफानों में,
निज मातृभूमि के रक्षाहित बलिदान हुए बीरानों में।
उनके लहू की तपन से तपकर प्रकाशवान् है जग सारा,
जिसमें समर में सबको रगड़ा वो चमके भारत प्यारा॥

तन-मन अर्पित देश धर्म पर कुर्बान जान भी करते हैं,
मेरा वतन हो महान् जगत् में बस ये ही प्रार्थना करते हैं।

उन पावन अमर शहीदों का सन्देश ये था सबसे न्यारा,
जिसमें समर में सबको रगड़ा वो चमके भारत प्यारा॥

अड़तालीस में जब दुश्मनों ने काश्मीर पे निगाह डाली,
याद करो उस 'सोम नाथ' को भू-ज्वालामुखी बना डाली।
उस परमवीर के शौर्य से अंकित होता है राजौरी सारा,
जिसमें समर में सबको रगड़ा वो चमके भारत प्यारा॥

जिसने अकेले बाहुबल से सारी चीनी सेना थामी,
'जसवन्त सिंह' वो वीर अनोखा उसकी कहानी सुनी जबानी।
उस समरवीर के शौर्य से गूँजित है अरुणाचल सारा,
जिसमें समर में सबको रगड़ा वो चमके भारत प्यारा॥

याद करो 'अब्दुल हमीद' को पैन्टन टैंक जला डाले,
पाकिस्तानी सेना के रण में उसने छक्के छुड़ा डाले।
परमवीर वो चक्र विजेता नतमस्तक है देश ये सारा,
जिसमें समर में सबको रगड़ा वो चमके भारत प्यारा॥

कारगिल के युद्ध में जिसने जय का डंका बजाया है,
शौर्य को जिसके देख के सारा भारत भी हर्षाया है।
'विक्रम बत्रा' शूरवीर था अखिल विश्व में सबसे न्यारा,
जिसमें समर में सबको रगड़ा वो चमके भारत प्यारा॥

भारत भू का मान किया निज जीवन का बलिदान किया,
जिन्होंने अपने साहस से था सारा सिन्धु छान दिया।
उन अमर शहीदों के कदमों में झुका हुआ ये जग सारा,
जिसमें समर में सबको रगड़ा वो चमके भारत प्यारा॥

आज के दिन हम सदा याद उन अमर शहीदों को करते,
उनके जैसे वीर बने हम यह प्रतिज्ञा भी करते।
स्वर्ण के सम ये दीप्त हो भारत चांदी जैसा इसका तारा,
जिसमें समर में सबको रगड़ा वो चमके भारत प्यारा॥

११. श्रेष्ठ भारत (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

दिव्यता में धीरता में वीरता में जो बड़ा,
बल-बुद्धि में धन-विद्या में कोई न आगे है खड़ा।
जिसकी ध्वजा की गूँज से सारा जहाँ गूँजित हुआ,
संसार का सिरमौर भारत द्योतित जहाँ से जग हुआ॥

उत्तुङ्ग चोटी पे चढ़े आचार और विचार की,
सारी ही दुनिया में चलाई रीति श्रेष्ठाहार की।

बर्बर म्लेच्छ ये विश्व सारा सभ्य था हमसे हुआ,
संसार का सिरमौर भारत द्योतित जहाँ से जग हुआ॥

सारी ही सृष्टि छान मारी ढूंढे रहस्याकाश के,
विद्या के व्यसनी थे सदा पर्याय थे हम विकास के।
सृष्टि के हित में ही हमारा ज्ञान था अर्जन हुआ,
संसार का सिरमौर भारत द्योतित जहाँ से जग हुआ॥

हम बाह्य उन्नति में सदा थे श्रेष्ठ इस संसार में,
और आन्तरिक मन से भी डूबे प्रेम पारावार में।
आध्यात्म विद्या से सुशोभित देश ये मेरा हुआ,
संसार का सिरमौर भारत द्योतित जहाँ से जग हुआ॥

हमसे अलौकिक ज्ञान का फैला प्रकाश जहान में,
हम थे गुरु सारे जगत् के दिव्य थे हम ज्ञान में।
यूनान, मिश्र, अरब में विद्या का प्रकाश हमसे हुआ,
संसार का सिरमौर भारत द्योतित जहाँ से जग हुआ॥

संसार में है दीखता उत्कर्ष और विकास है,
उस दीप में बाती के सम इस देश का ही प्रकाश है।
जिसकी अलौकिक शान्ति का अनुगामी था ये जग हुआ,
संसार का सिरमौर भारत द्योतित जहाँ से जग हुआ॥

जिस तरीके से दिवाकर पूर्व से है फूटता,
संसार में है फैलती किरणों से उसकी द्योतता।
वैसे ही मेरा देश भारत दिव्यता से स्फुट हुआ,
संसार का सिरमौर भारत द्योतित जहाँ से जग हुआ॥

१२. मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

तेरे दिखाए पथ पे भारत चल रहा है आज भी,
निज शत्रु के मर्दन को कर अब जी रहा है आज भी।
प्राणभूता तू सदा निज संस्कृति निज देश का,
हे राम! तू शाश्वत समय से प्राण मेरे देश का॥

तूने सिखाया शत्रु को भी प्राण दो न तुम कभी,
तूने दिखाया पथ वो जो खुशियों से भरता आज भी।
पालन है करता आज भारत तेरे ही आदेश का,
हे राम! तू शाश्वत समय से प्राण मेरे देश का॥
निजपितृ का आदेश पालन करके छोड़ा राज भी,
वनवास को पाकर के भी पूर्ण किया हर काज भी।

आदेशपालक तू सदा पालन तेरे उपदेश का,
हे राम! तू शाश्वत समय से प्राण मेरे देश का॥

वनवास में भी शूरता और वीरता से तू भरा,
खाली किया नैमिष कानन को राक्षसों से सर्वदा।
दुष्ट पुरूषों के लिए अब बाण यें सन्देश का,
हे राम! तू शाश्वत समय से प्राण मेरे देश का॥

सिद्धान्त है संसार में फिर से न शर तुम साधते,
प्रतिज्ञा तेरी है अटल श्री रामो द्विर्नभाषते।
कायल है ये परिवार तेरे व्याप्त इस सन्देश का,
हे राम! तू शाश्वत समय से प्राण मेरे देश का॥

हे राम! तेरा ये चरित फैला हुआ अब काव्य है,
लाखों कवि बनते है तुझसे ये सहज सम्भाव्य है।
तू देव अब आधार है इस देश और गणवेश का,
हे राम! तू शाश्वत समय से प्राण मेरे देश का॥

इस आर्यजाति, संस्कृति का आराध्य भी तू राम है,
ये सभ्यता सारी टिकी आधार भी तू राम है।
तेरा ये वाक्य प्रतीत है जैसे हो ये अखिलेश का,
हे राम! तू शाश्वत समय से प्राण मेरे देश का॥

१३. योगीराज श्री कृष्ण (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

विद्या, कला, कौशल्य में भी जो रहा था अग्रणी,
जिसके प्रताप से शक्ति भी आज शूरवीरों की थमी।
विद्याविलासी वीर वो था ज्येष्ठवर्गों में गिना,
श्रीकृष्ण की नीति पे चलकर श्रेष्ठ भारत है बना॥

आधार आर्यों के अडिग जातीय जीवन का सदा,
उपदेश गीता का दिया तूने समर में सर्वदा।
था धीरता से वीरता से वो हमेशा से सना,
श्रीकृष्ण की नीति पे चलकर श्रेष्ठ भारत है बना॥

था मेदिनी तल में तेरी ही वीरता का जोर भी,
दूजा न कोई योग में भी तेरे जैसा धीर भी।
था नाम योगीराज दूजा मोक्षपद में जो रमा,
श्रीकृष्ण की नीति पे चलकर श्रेष्ठ भारत है बना॥

सांदीपनी आश्रम में रहकर श्रेष्ठ विद्याध्ययन किया,
शस्त्रविद्या शास्त्रविद्या को वहाँ पूर्ण किया।

कंस के मर्दन को करके तूने सिखाया था जीना,
श्रीकृष्ण की नीति पे चलकर श्रेष्ठ भारत है बना॥

जो वेदविद्या शस्त्रविद्या शास्त्रविद्या युक्त था,
निज कर्म को करके कृष्ण जो सर्वदा ही चुस्त था।
अग्रपूजा के लिए था भीष्म ने उनको चुना,
श्रीकृष्ण की नीति पे चलकर श्रेष्ठ भारत है बना॥

श्रीकृष्ण-सा जो आप्त है इतिहास जिसका स्वच्छ है,
चोर माखन का बता उसको किया अब भ्रष्ट है।
रास का कर्ता बता हमने बुराईयों से सना,
श्रीकृष्ण की नीति पे चलकर श्रेष्ठ भारत है बना॥

हे दयामय! कृष्ण की निन्दा न हमसे हो कभी,
सारे यें मिथ्या दोष का आरोह ना हो अब कभी।
सच्चा इतिवृत्त कृष्ण का संसार में सबको सुना,
श्रीकृष्ण की नीति पे चलकर श्रेष्ठ भारत है बना॥

१४. आचार्य चाणक्य (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

खण्ड-खण्डित देश था निज भाग्य को था कोसता,
कब मेरी सन्तानों में से दूर होगी क्रूरता।
तूने था जोड़ा देश को जैसे कि ये परिवार है,
चाणक्य की बुद्धि का वन्दन कर रहा संसार है॥

चेहरे पे तेरे क्रूरता वात्सल्यता अन्तः में थी,
देश के उत्थान की चिन्ता भी तेरे मन में थी।
कूटनीति का रहा तू ही विपुल भण्डार है,
चाणक्य की बुद्धि का वन्दन कर रहा संसार है॥

नीति का ज्ञाता तू अनोखा धीर था तू निश्चली,
निज बुद्धि के दम पे तेरे आगे थी सेना थम गई।
तेरी कुटिलता से विनाशित नन्दों का परिवार है,
चाणक्य की बुद्धि का वन्दन कर रहा संसार है॥

यूनान की खड्गों का शौर्य जिस शूर के दम पे थमा,
वह चन्द्रगुप्त था मौर्य तेरी ही विद्या से सना।
तेरे अखण्डित राष्ट्र के प्रण का लिया आधार है,
चाणक्य की बुद्धि का वन्दन कर रहा संसार है॥

तूने सिकन्दर को रोका एकत्र भारत को किया,
तेरी ही नीति ने पराजित सारी दुनिया को किया।
देश ही जीवन तेरा था देश प्राणाधार है,
चाणक्य की बुद्धि का वन्दन कर रहा संसार है॥

तेरे अलौकिक ज्ञान का कायल हुआ यूनान है,
इण्डिका में है लिखा कौटिल्य देव समान है।
कूट नीति से भरा तेरा सदा व्यवहार है,
चाणक्य की बुद्धि का वन्दन कर रहा संसार है॥

तेरे अनुगामी शिवाजी बाजी जैसे वीर हैं,
युद्ध में तेरी ही शिक्षा से सदा ही धीर हैं।
तेरे दिखाये पथ को ही सबने बनाया आचार है,
चाणक्य की बुद्धि का वन्दन कर रहा संसार है॥

दुष्ट को न दो क्षमा प्रतिकूल जो तेरा रहे,
कूटनीति ज्ञान में संसार तेरा ऋणी रहे।
नि:स्वार्थता तुझमें भरी व प्रेम अपरम्पार है,
चाणक्य की बुद्धि का वन्दन कर रहा संसार है॥

१५. पृथ्वीराज चौहान (कविता) :: छन्द - कवित्त

रावण के आननों दलता है राम जैसे,
जैसे बजरंगी सारी लंका को जलाता है।
जैसे अंगद पैर टेके शत्रुओं के मण्डप में,
जैसे लक्ष्मण शत्रुओं के तेज को घटाता है।
आँधी के समान टूटा मीरों की सेना पे जो,
जिसके भय से आज काल भी थम जाता है।
बीसल का वंशज वो पृथ्वीराज धीर-सा,
जिसका रण शौर्य आज गजनी हिलाता है॥

दिल्लीपति चौहानों के कुल का रखवाला जो है,
राजपूत शूरों की आँखों का जो तारा है।
जिसके समर से था काँपा उत्तरापथ सारा,
उस बीसल देव का वंशज ये प्यारा है।
थर-थर काँपा कान्यकुब्ज गुजरात सारा,
जब दिल्ली सेना ने पक्तावत सजाया है।
हाहाकार मची सारे शत्रुओं के खेमे में,
जब समर में शेर पृथ्वी राज आया है॥

जिसके शब्दवेधों ने गौरीदल को छेद डाला,
गजनी का उन्नत मस्तक भू में मिलवाया है।
जिसका सेनापति चामुण्डा सा धीर-सा,
जिसके खप्पर ने आज शत्रु को हिलाया है।
जिसने गौरशाह गौरी को रगड़ डाला,
नाम अपनी मातृ-भू का ऊँचा उठाया है।
पृथ्वी-सा धीर वो था पृथ्वीसूत पृथ्वीराज,
जिसकी विजय ने आज धरती को हिलाया है॥

रण को बनाया खून के तालाब जैसा,
खड्गों से किया गौरी दल का सफाया है।
जिसकी यश, कीर्ति आज फैली है त्रिलोकी में,
जिसने अपने तेज से आज जग को कँपाया है।
अत्याचारियों को जिसने यमलोकपुरी भेजा,
उसके समर के आगे जहाँ ने सर झुकाया है।
उस नर श्रेष्ठ नरपुंगव ने वीरता से,
सारी दुनिया को वीर पाठ सिखलाया है॥

दुर्धर लाखों वीर उसकी सेना को चमकाते,
अच्छे-अच्छे वीर आज जिनसे भय खाते हैं।
चामुण्डराय, कैमाष संपतराय जैसे वीर,
सारे रणों में आज खलबली मचातें हैं।
विख्यात चाचा कान्ह और हाहुली जैसे शेर,
सारी दुनिया को आज चरणों में लुटाते हैं।
ऐसे वीर है जिसकी सेना में भरे हुए,
आज वो पृथ्वी राज कहके पूजे जातें है॥

गौरी और ऐबक को रण में पटक डाला,
चामुण्डराय उस वीर का ही नाम है।
रगड़ा जिससे मीर को अजमेरी जंग में,
कैमाष नाम शत्रुनाश उसका ही काम है।
चाचा कान्ह-सा योद्धा न जिसकी होड कोई,
जो ज्ञानी दण्ड भेद और साम दाम है।
हजारों तीर टूटे जिसकी छाती में लगके आज,
हाहुली राय शूर का शेर सा नाम है॥

सारे आर्यावर्त को जो सबसे बड़ा राजा है,
जिसके दरों पे आज सबने सर झुकाया है।

विख्यात है जो शूर शब्दभेदी तीरों से,
सारे विश्ववीरों को जिसने भय खिलाया है।
'निशान्त' है शान्त उस शब्दवेधी वीर से,
जिसने आज अपना बल ये दिखाया है।
जय जय वीर जय जय वीरजय जय वीर पृथ्वीराज,
भारत माँ ने पूत आज धाँसू ये पाया है॥

१६. महाराणा प्रताप (कविता) :: छन्द - कवित्त

हिरणों के झुण्ड को कुचलता है सिंह जैसे,
जैसे सूर्य रश्मियों से भागता अंधेरा है।
दिवाकर के सामने न टिका निशाकर कभी,
तम के समक्ष जैसे सूरज उजेरा है।
यवनों के शौर्य की भुजा को जिसने फाड़ फेंका,
जिसके समक्ष टूटा यवनों का घेरा है।
समरों का शेर वो प्रताप नरपुंगव-सा,
जिसके रण-शौर्य का दिलों में सबके डेरा है॥

अदम्य शौर्य साहस से युक्त मस्त है सदा,
जो आन-बान-शान और मान का प्रतीक है।
जो राजपूती खून के उबाल-सा धधक रहा,
जिसके लम्बे सेल ने सिखाई सबको सीख है।
उसकी तपन से है तपते राजपूत सारे,
जो माँगता न कभी मुगलों से भीख है।
वो राणा हल्दीघाटी के समर में खड़ा हुआ,
जैसे गीदड़ दल के मध्य सिंह निर्भीक है॥

चकित मुगल सारे चौंके-चौंके बार-बार,
दिल्लीपति मुगलों की श्री भी आज रोती है।
डरते राठौड़ सारे जिसकी लम्बी खड्गों से,
जिसके समक्ष सबकी वीरता भी सोती है।
जिसने सारे मुगलों को रण में रगड़ मारा,
मार-मार सबकी कर दी दाड़ी छोटी है।
उस नर श्रेष्ठ वीर पुंगव को देख-देख,
मैनें है सपूत जना भारत माँ भी कहती है॥

चेतक सवारी जिसकी खून की फुहारी जिसकी,
हल्दी और कुम्भल के रण को भिगोती है।

जिसके तेज अंश से है जलता मुगलों का तारा,
शत्रु की दाल भी न जिसके आगे गलती है।
मार-धाड़-फाड़-फाड़ शत्रुओं की चिंघाड़,
जिसके भाले के आगे पानी भी न पीती है।
रणसिंह रणवीर वो प्रताप महावीर,
जिसका नाम सुनके आज छाती चौड़ी होती है॥

रण में थर्राया छाया बन के हवा का झोंका,
जिसने रणों में शत्रुदलों को छकाया है।
हल्दी घाटी में वो छाया शत्रुओं पे बादल जैसे,
जिसकी देख चाल आज मानसिंह घबराया है।
जिसके ही दम पे है चलता मेवाड़ सारा,
उस सूर्यवंशी को भी चेतक ने बचाया है।
उस वीर अश्व चेतक का बखान करना,
मानो दीप ने रास्ता आज सूर्य को दिखाया है॥

जिसने समर में है सब को रगड़ मारा,
तेज तेजधारियों का जिसने मिटाया है।
जिसकी जय-जयकार से है गूंजता चित्तौड़ सारा,
जिसका नाम सुनके आज चैन दिल ने पाया है।
यौवन से भरी जवानी देश के है नाम करी,
मातृभूमि के हित में अर्पित कर दी काया है।
उस महावीर सूर्यवंशियों के सूरज का,
करके बखान मैंने फर्ज निभाया है॥

धन्य है वो राजपूत धन्य है मेवाड़ सारा,
निखिल जगत् को आज जिसने कंपाया है।
जिसकी करने को होड़ आते राजकुल सारे,
मगर वहाँ पे ठौर किसी ने न पाया है।
प्रताप था प्रताप-सा ही उपमा न जिसकी कोई,
'निशान्त' के मन को आज वो ही तो भाया है।
नमन है मेरा उस वीर भूमि माटी को,
जिसने प्रताप जैसा वीर ये दिलाया है॥

१७. छत्रपति शिवाजी (कविता) :: छन्द - कवित्त

उस नरपुंगव महाबली का करते हैं हम गान यहाँ,
निज जननी और जन्मभूमि का जिसने रखा मान यहाँ।

जिसके रण-शौर्य से परिचित था भारत का भू-तल सारा,
शेर शिवाजी के भय से था भागा मुस्लिम दल सारा॥

गौ-माता व भारतमाता का अपमान नहीं देखा था,
गौ-वधिकों यवनों को जिसने यमलोकपुरी को भेजा था।
जो बना हिन्दु-कुल का सूरज था तेज-से कांपा जग सारा,
शेर शिवाजी के भय से था भागा मुस्लिम दल सारा॥

सपने में जिसको देख-देखकर सारी मुगलशाही जागी,
जिसके रण-कौशल की धाक से सारी कुतुब सल्तनत भागी।
बीजापुर के सुल्तानों का घटता यशमण्डल सारा,
शेर शिवाजी के भय से था भागा मुस्लिम दल सारा॥

निज मातृभूमि के लिए लड़ें हम ये प्रण उसका पावन था,
रण में बहाई खून की नदियाँ ये ही उसका सावन था।
जिसकी कूटनीति के आगे नतमस्तक है जग सारा,
शेर शिवाजी के भय से था भागा मुस्लिम दल सारा॥

जैसे शेर मृगों को मारे वैसे शिवाजी मुल्लों को,
जैसे दावानल कानन रगड़े वैसे शिवाजी रसूलों को।
राम-कृष्ण के जैसे जिसका छाया विमल तेज सारा,
शेर शिवाजी के भय से था भागा मुस्लिम दल सारा॥

जिसने चारों सुल्तानों की सेना का किया सफाया था,
अंग्रेजों के दल में जिसका विकट शौर्य भी छाया था।
उसके समर के आगे झुका जंगी जहाजी दल सारा,
शेर शिवाजी के भय से था भागा मुस्लिम दल सारा॥

जिसके शोणित की तपन से तपकर लाखों योद्धा खड़े हुए,
बाजीराव, बालाजी और भाऊ सदाशिव राव बढ़े हुए।
जिसके प्रण की रक्षा करने रण में कूदा महाराष्ट्र सारा,
शेर शिवाजी के भय से था भागा मुस्लिम दल सारा॥

१८. पेशवा बाजी राव (कविता) :: छन्द - कवित्त

दावा द्रुमदण्ड पर चीतामृग झुण्ड पर,
जैसे सिंह शावक ने हस्ति को हराया है।
काँप उठा सारा भारत जिसके रणकौशल से,
रण के खेतों में जिसने मुगलों को भगाया है।
थरथर काँपें सारे मुल्ले जिसकी ढालों से ही,

जिसने नाम बाला जी का रोशन कराया है।
बाज के समान चाल बाजीराव की देख-देख,
सारे मुगलों ने आज मस्तक झुकाया है॥

भागे थे निजाम सारे भागे थे रुहिल्ले सारे,
समर के अन्दर उसने पट्टे को घुमाया है।
बंगश की धोती फटी बुन्देले के युद्ध में,
खून जिसने ताजा ताजा मुगलों का बहाया है।
अपनी धरती अपना राज उसका ही घोष था,
जिसने हिन्दु राज्य करके पूरा दिखलाया है।
चीते की चाल जैसा बाजीराव बल्लाल जैसा,
दूजा पूत भारत माँ ने फिर तो न पाया है॥

अदम्य शौर्य साहस का जलता अंगारा जैसा,
जिसने रणों को मध्य धारों में मचाया है।
समर विजेता बना चालीस युद्ध जीतकर,
बड़े-बड़े राजवंशों को जिसने हिलाया है।
आते महावीर योद्धा चतुर युद्धनीति वाले,
सबको समर में जिसने मार भगाया है।
बाला जी का पूत धाँसू बाजी जीत बाजीराव,
जिसका तेज शौर्य आज अवनितल पर छाया है॥

जो बना सूरज सारी पेशवाई जीत का,
बड़े-बड़े शूरों को जिसने किया ठण्डा है।
तेरह की उम्र में ही जीता था पुरन्दरगढ़,
जोश और शान से फहराया भगवा झण्डा है।
कुर्बान लाखों बाजीराव भगवा झण्डों पे आज,
खून से जिसने किया नर्मदा को गन्दा है।
तलवार जैसा तीक्ष्ण महावीर बाजीराव जैसा,
छत्रपति कहता आज दूजा न कोई बन्दा है॥

जिसका उद्घोष सुनकर शत्रुओं के दल काँपें,
मराठा सेनाओं के शौर्य की जो नैय्या है।
आँधी रोके आज तो हम बने तूफान से,
तूफान आगे आये तो हम आग का दरिया है।
कसम शिवा की आज छायेगा हमारा राज,
मराठा साम्राज्य बना हिन्दु का खिवैया है।

सारी हिन्दु जाति उसके चरणों में आन गिरी,
हे बाजीराव अब तू ही तो बच्चैया है॥

धन्य है वो चित पावन धन्य है वो ब्राह्मण कुल,
पेशवा वीरों का जो वंशकुल प्यारा है।
सारे महाराष्ट्र में है गूँजे आज उसका नाम,
छत्रपति प्रण का जो पालन करने हारा है।
दुश्मन का दम चाहे कितना भी क्यों न हो,
उनको मिटाना अब लक्ष्य ये हमारा है।
जय जय वीर जय जय वीर जय जय वीर बाजी राव,
तू ही प्राणदाता और रक्षक हमारा है॥

सारी दुनिया में आज जिसका बजा है डंका,
जिसके ही रण से बचती हिन्दु जाति है।
शेर शिवाजी महाराजे का ध्वज वाहक,
पेशवा परिवार का ही दिया और बाती है।
उसके गुणों को आज गीतों में समेट पाना,
मानो नदी सारी गागर मे जाती है।
धन्य हुआ 'निशान्त' उसकी कविता को गाके आज,
जिसका नाम सुन सुन होती चौड़ी छाती है॥

१९. महर्षि दयानन्द सरस्वती (कविता) :: छन्द - कवित्त

जैसे सर्पझुण्डों पर मोर का है भारी पंजा,
जैसे दावा काननों को धू-धू कर जलाता है।
जैसे रणवीरों से है डरते सारे योद्धागण,
जैसे सूर्य तेज सारे तारों का घटाता है।
विद्या दीप हाथ में है ओम् ध्वजा साथ में है,
निजज्ञानदीप्तियों से देश को जगाता है।
सारे आर्यावर्त को निज तेज से व्याप्त करता,
दयानन्द नाम उसका निर्भय वो कहाता है॥

जिसने घरबार छोड़ा करने खोज सत्य सारी,
जिसने सच्चे शिव का ध्यान यें लगाया है।
सारे साधुओं से मिला सारे वो मठों में घूमा,
पर ठौर आके उसने मथुरा में पाया है।
बिलख-बिलख रोया देश की दशा को देख,
उद्धार करने को इसका प्रण यें उठाया है।

धन्य हुई सारी भूमि भारत और विश्व की,
दयानन्द जैसा शूर सहायक बनके आया है॥

ऋषि था अकेला उसके सामने था जग सारा,
मृत्यु से न डरता वो न भय कभी खाता है।
अपने तेज शौर्य और धीरता व वीरता से,
सारे व्याप्त देश को वो क्षण में हिलाता है।
सत्य ज्ञान वेद का है लेकर चला वो आज,
'वेदों की ओर लौटों' नारा यें लगाता है।
हृदय के अन्दर व्याप्त देश की है दु:ख पीड़ा,
करूँगा कल्याण इसका प्रण यें उठता है॥

जहाँ भी टिकाया पैर तप: पूत स्वामी जी ने,
फिर न किसी ने भी वहाँ से हटाया है।
पाखण्ड़ी दलों की वहाँ भरमार भीड़ आयी,
पर उस देव से भी कोई न जीत पाया है।
काशी शास्त्रार्थ सारी दुनिया का साक्षी है,
शेर ने अकेले सारे काशी को हराया है।
सारे पण्डे सारे झण्डे अभिभूत होते है,
स्वामी जी के तेज ने ही सबको डराया है॥

ऋषि अलबेला था वो जग में अकेला था वो,
तेज से ही सारे जिसने विधर्मी भगाएं है।
जिनमें है तम और पाखण्ड भी घोर-सा,
ऋषि ने वो सारे गढ़ पाखण्डी हिलायें है।
भारतीय सभ्यता है तेजधारी सबसे बड़ी,
प्रमाण भी सारे उसने अंग्रेजों को दिखाएं है।
ज्ञान से भरूंगा फाड़ तम की छटा को सारी,
सारे विश्व को ही उसने वेद यें बतायें है॥

सारी कुरीतियों के जाल को है तोड़ डाला,
दलित जनों को जिसने माटी से उठाया है।
बालविवाह व्याप्त था जो सारे ही देश में,
उसका विरोध स्वामी जी ने करवाया है।
नींद से है व्याप्त सारा देश झकझोर डाला,
विधवा की मांग को भी फिर से सजवाया हैं।
गोओं की रक्षा लोगों! देश की ही रक्षा है,
ये ही पाठ उसने सारे जनों को पढ़ाया है॥

बड़े-बड़े ज्ञानीजन चरणों में आन गिरें,
क्रान्तिकारी वीरों का भी गुरू वों कहाया है।
महानीच निर्दयी दया की है मांग करते,
दयानन्द रूपी सागर जग यें डुबाया है।
धन्य है वो ब्राह्मण कुल धन्य गुजरात सारा,
सूर्य वेद रश्मियों का जिसने उगाया है।
दयानन्द वीर धीर दयानन्द शूरवीर,
दयानन्द दयानन्द दयानन्द छाया है॥

२०. महारानी लक्ष्मीबाई (कविता) :: छन्द - कवित्त

सर्वस्व मेरा भी जाये पर शीश नहीं झुकने दूंगी,
समराङ्गण की बलिवेदी पर मैं कदम नहीं रुकने दूंगी।
उस मर्दानी के शौर्य से चमका भारत भूमि का तारा,
बोल उठा तब झांसी सारा जय लक्ष्मी बाई का नारा॥

जिन हाथों में कंगन थे उन हाथों ने हथियार लिये,
देशभक्ति को दिल में भर कर शत्रु के प्रति अंगार लिए।
जिस पर सजती रेशम साड़ी उस तन पर केसरिया धारा,
बोल उठा तब झांसी सारा जय लक्ष्मी बाई का नारा॥

अपनी झांसी नहीं दूंगी वह बिजली जैसी कड़क पड़ी,
सत्तावन के समरकुण्ड में मर्दानी वह कूद पड़ी।
उसकी तलवार के तूफानों से सारा शत्रुदल हारा,
बोल उठा तब झांसी सारा जय लक्ष्मी बाई का नारा॥

झन-झन असि झंकारों में रिपुदल की ललकारों में,
वो रुकी नहीं वो झुकी नहीं वो भरी नदी की धारों में।
बुन्देलों ने विरुदावली में उस मर्दानी को धारा,
बोल उठा तब झांसी सारा जय लक्ष्मी बाई का नारा॥

रण में भड़की चपला-सी वो तीरों की बौछारों में,
तलवारों से लड़कर दुश्मन पहुँच गए यमद्वारों में।
खून बहाया शत्रु का और कहा देश ये अमर हमारा,
बोल उठा तब झांसी सारा जय लक्ष्मी बाई का नारा॥

अंग्रेजों की खाट खड़ी की कालपी के मैदानों में,
उसकी खड्गें रुकी नहीं थी आँधी और तूफानों में।
शूर वीरता व्याप्त थी उसमें निर्मल तेज था सबसे न्यारा,
बोल उठा तब झांसी सारा जय लक्ष्मी बाई का नारा॥

पराधीनता की बेड़ी को तोड़ा निज बलिदान किया,
इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में रोशन निज नाम किया।
सर्वोन्नति का पथ दिखलाया अनुगामी ये जग सारा
बोल उठा तब झांसी सारा जय लक्ष्मी बाई का नारा॥

भारत वीरों याद रखो उस अमर आत्मा की गाथा,
जिसके आगे निखिल ये भारत श्रद्धान्वित है शीश झुकाता।
देश धर्म को श्रेष्ठ मानकर वैभव भर दो यहाँ अपारा,
बोल उठा तब झांसी सारा जय लक्ष्मी बाई का नारा॥

२१. विनायक दामोदर सावरकर (कविता) :: छन्द - कवित्त

जब तक नृशंस विदेशी को न रण क्षेत्रों में रगड़ूंगा,
हार नहीं मानूंगा तब तक चैन से न मैं बैठूंगा।
आराध्य शिवाजी का वंशज कुल देवी का वह चीख पड़ा,
वीर सावरकर समर सिन्धु में वडवानल-सा टूट पड़ा॥

महाशपथ है मेरी माँ तेरा कल्याण करूँगा मैं,
तव महाभूमि को धन दौलत से ही भरपूर भरूंगा मैं।
भारत की ताकत दुनिया देखे यह कहकर वो फूट पड़ा,
वीर सावरकर समर सिन्धु में वडवानल-सा टूट पड़ा॥

काल स्वयं डरा था तुझसे महाकाल बना था तू जग में
काले पानी के काले विष को घूंट-घूंटकर डाला तन में।
काल का काला पंजा भी था तेरे आगे छूट पड़ा,
वीर सावरकर समर सिन्धु में वडवानल-सा टूट पड़ा॥

तेरा उद्घोष सुना था जग ने सौभाग्यवान् ये भारत है,
भारतभूमि स्वर्ग से सुन्दर सुर भी करते चाहत हैं।
सच्चे पूत हम भारत माँ के आँखों से पानी फूट पड़ा,
वीर सावरकर समर सिन्धु में वडवानल-सा टूट पड़ा॥

मैने तुझको जब-जब देखा प्रचण्ड सूर्यसम जलते देखा,
अंगारों में जैसे लोहा कुन्दनसम तुझे बनते देखा।
निज मातृभूमि की सेवा में जो अंगारों पर कूद पड़ा,
वीर सावरकर समर सिन्धु में वडवानल-सा टूट पड़ा॥

तू तम के अंधे पंथों में प्रकाशपुंज के सम धधका,
तू अग्निपुत्र तू धनञ्जय तू मृत्युञ्जय के सम भभका।
तेरे पन्थों का रोड़ा भी तेरे ही अनुसार पड़ा,
वीर सावरकर समर सिन्धु में वडवानल-सा टूट पड़ा॥

तू असीम और धीर–वीर तू भारत का दीवाना,
महानमन है तुझको मेरा तू देशशमा का परवाना।
दुनिया झुकी तेरे चरणों में गौरव देश का बहुत बड़ा,
वीर सावरकर समर सिन्धु में वडवानल–सा टूट पड़ा॥

२२. चन्द्रशेखर आजाद (कविता) :: छन्द – कवित्त

तेज तम अंश पर पड़ता है जैसे भारी,
जैसे एक नकुल सारे सर्पों को भगाता है।
जैसे घनघोर बादल गीली करते सारी धरती,
जैसे वीरपुंगव सारे शत्रु को डराता है।
चतुरंगी वीर योद्धा लेकर चला आज,
जिसके तेज शौर्य से शत्रु घबराता है।
जिसने अग्रेजों के सारे दाँत किये खट्टे,
चन्द्रशेखर नाम जिसका शूर जो कहलाता है॥

जिसका उद्घोष सुनके शत्रुओं के दल काँपे,
रगों को जिसकी वीरता नें आजमाया है।
साँडर्स का वध किया जिसने चौराहे पर,
जिसके शूरों ने आज लाहौर हिलाया है।
ट्रेन लूटी काकोरी में वीरता के साथ जिसने,
जिसने गौरों को आज भय ये दिलवाया है।
शंकर के सम जो हलाहल पीने वाला,
जिसका शौर्य आज सारे भूमण्डल में छाया है॥

अदम्य शौर्य साहस से जिसने है बाना पहना,
जो कि वीरता से क्रांतिज्योति को जलाता है।
भगत सिंह सुखदेव जैसे वीर है जहाँ,
जिनके दलों को आज शौर्य से सजाता है।
काँपे सारे अंग्रेज जिसकी गोली से आज,
खून शस्त्रधारियों का रण में बहाता है।
रण–शौर्य जलता जिसका चन्द्रमा के जैसे आज,
भारत माँ का वीर पूत शेर वो कहाता है॥

वीरता और सौम्यता का जिसके यहाँ संगम है,
त्याग देशप्रेम से भी तन को सजाया है।
खुद रहा भूखा पर न किसी को सोने दिया,
मातृभूमि रक्षा का ये बीड़ा जो उठाया है।

क्रांतिकारी ज्योति को न जिसने मन्द होने दिया,
देश धर्म में आज अर्पित कर दी काया है।
चन्द्रशेखर चन्द्र सा वो चमका अंधियारों में,
जिसकी चमक ने आज भारत ये डुबाया है॥

अल्फ्रेड पार्क में वो शेर पूत सम डटा,
अग्रेजों के आज वहाँ छक्के जो छुड़ाये है।
नॉट बाबर भागा घूमा गोलियों से डरके जिसकी,
जिसने नाम ब्राह्मण कुल ऊँचा उठवाया है।
आजाद थे आजाद रहेंगें ये उसका ही घोष था,
तेज तेजधारियों का जिसने मिटाया है।
जय जय वीर जय जय वीर जय जय वीर चन्द्रशेखर,
ऐसा वीर पूत भारत भूमि ने ये पाया है॥

२३. भगतसिंह (कविता) :: छन्द - कवित्त

पराधीनता रूपी तम में कुमुदिनी सम जो चमक उठा,
जिसके पैरों के रव से था सारा भारत धमक उठा।
इंकलाब था नारा जिसका रिपु दल भी थर्राता है,
भगतसिंह था शेर सूरमा सारा भारत गाता है॥

उदित हुआ जो बाल रविसम वीरता रूपी गगनों में,
जिसके आगे कलुषित तारे टूट गए गिरिविपिनों में।
व्याप्त वीरता के भूषण से जो खुद को चमकाता है,
भगतसिंह था शेर सूरमा सारा भारत गाता है॥

तेवर को तेरे देख-देखकर सारे शत्रु ढेर हुए,
शूरवीरता शौर्य से सारे गीदड़ चकनाचूर हुए।
वतन के प्रति स्नेह तुम्हारा देख देश हर्षाता है,
भगतसिंह था शेर सूरमा सारा भारत गाता है॥

सांडर्स ने भी लालाजी पर जब लाठी बरसायी थी,
बालरविसम अरुण हुआ मुख आँखों ने ज्वाला दिखाई थी।
चौराहे पर ठोका सांडर्स गोरा दल घबराता है,
भगतसिंह था शेर सूरमा सारा भारत गाता है॥

आँखों में तेरे प्रतिषोध की ज्वाला हाथों में अंगारे थे,
विपुल वेग था बल विक्रम था गोरे सारे मारे थे।
तू आदर्श मेरे देश का बच्चा-बच्चा सुनाता है,
भगतसिंह था शेर सूरमा सारा भारत गाता है॥

भोगों को और लोक लालसा को तूने विसराया था,
भारत भूमि भव्य करूंगा तूने बेड़ा उठाया था।
तेरे वचन को सुन आह्लादित दिव्य देश हो जाता है,
भगतसिंह था शेर सूरमा सारा भारत गाता है॥

श्वेताङ्ग गणों के शवों से तूने शयनागार बनाया था,
असेम्बली में किया धमाका सारा देश गुंजाया था।
बधिरों को सुनवाने को ही रव करवाया जाता है,
भगतसिंह था शेर सूरमा सारा भारत गाता है॥

युवावस्था देश को अर्पित कर दी तूने हंसते-हंसते,
भारत तेरी कुर्बानी को ना भूलेगा किसी भी रस्ते।
तू आदर्श है मेरे देश का जननी भारतमाता है,
भगतसिंह था शेर सूरमा सारा भारत गाता है॥

२४. सुभाषचन्द्र बोस (कविता) :: छन्द - कवित्त

लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे छाये सबके सीने में,
तेरे वचनों का पालन कर मिलता है सुख जीने में।
दिव्य अलौकिक तेज था तेरा वसुधा गाती तेरी वाणी,
सुभाषचन्द्र के शौर्य की तुमको आज सुनाता हूँ मैं कहानी॥

शत-शत फेनोच्छ्वसित जलों में बियावान वीरानों में,
फौलाद के सम तू सख्त रहा रण के बीहड़ मैदानों में।
लोहे से लोहा टकराता वैसे तेरी है ये जवानी,
सुभाषचन्द्र के शौर्य की तुमको आज सुनाता हूँ मैं कहानी॥

सूरज चन्दा बनके चमका भारत के भाग्याकाश में तू,
तू जिन्दा है कविता में और कवियों की हर साँस में तू।
ज्वाजल्यमान है स्वाभिमान भी तेरी है न कोई सानी,
सुभाषचन्द्र के शौर्य की तुमको आज सुनाता हूँ मैं कहानी॥

द्वितीय विश्वयुद्ध में सपना भारत का साकार किया,
जापान, जर्मनी में जाकर आजाद फौज निर्माण किया।
तेरी सेना ने निज भारत मुक्ति की शपथ ये ठानी,
सुभाषचन्द्र के शौर्य की तुमको आज सुनाता हूँ मैं कहानी॥

तुम रक्तदान दो वसुधा को आह्वान करो आह्वान करो,
भारत भूमि परतन्त्र न हो बलिदान करो बलिदान करो।
तेरे चरणपथों की गामी सारी दुनिया तेरी दिवानी,
सुभाषचन्द्र के शौर्य की तुमको आज सुनाता हूँ मैं कहानी॥

खून से लथपथ देह समर्पित तव चरणों में करता हूँ,
निज शीश का अर्पण मेरी माँ तेरी भक्ति में करता हूँ।
फौलाद रहा सेवा में तेरी शाश्वत तेरी है ये निशानी,
सुभाषचन्द्र के शौर्य की तुमको आज सुनाता हूँ मैं कहानी॥

तू साधक था युगदृष्टा था तू निखिल देश का सृष्टा था,
तू भक्त था भारतमाता का और पीड़ा का संहर्ता था।
चञ्चल सागर वन्दन करता पराक्रम तेरा था चट्टानी
सुभाषचन्द्र के शौर्य की तुमको आज सुनाता हूँ मैं कहानी॥

२५. धीर पुरुष (कविता) :: छन्द - कवित्त

जो दु:खियों के दु:ख को हरकर उनका सन्ताप मिटाते हैं,
जो प्यासे को पानी और भूखों को अन्न खिलाते हैं।
निजदेश-धर्म की रक्षा को जो अपना लक्ष्य बनाते हैं,
धीर वही होते जो जग में अपना नाम कमाते है॥

परोपकार है जिनकी रग में दयाभाव भी भरा हुआ,
परपीड़ा को देख के जिनकी आँखों में पानी भरा हुआ।
दु:खीजनों की सेवा में जो अपना समय लगाते हैं,
धीर वही होते जो जग में अपना नाम कमाते है॥

जिनके पावन बल से है जीवित ये संसार हमारा,
राग-द्वेष को दूर भगाकर जग जीवन है जिसने सुधारा।
जो सूरज की किरणों के सम द्योतित होते जाते हैं,
धीर वही होते जो जग में अपना नाम कमाते है॥

जिनके हाथ खुले रहते हैं सबको गले लगाने को,
जो प्रकाशित होते रहते हैं तम को दूर भगाने को।
महापुरुषों के पथ का दर्शन जो सबको करवाते हैं,
धीर वही होते जो जग में अपना नाम कमाते है॥

लाखों बाधाएँ आयें पर जो कभी न विचलित होते हैं,
जो चीरकर तम की छाती ज्योतिसम द्योतित होते हैं।
जो अपने कर्मों से जग में अपना वन्दन करवाते हैं,
धीर वही होते जो जग में अपना नाम कमाते है॥

जो लोगों के कष्टों के हारी दु:खियों के अभिभावक हैं,
जो मित्र सदा सत्पुरुषों के और दुष्टों के सन्तापक हैं।
मेहनत जिनके हाथ की रेखा सुकर्म ही जिनको भाते हैं,
धीर वही होते जो जग में अपना नाम कमाते है॥

जो तूफानों से टक्कर लेकर मझधार में नाव चलाते हैं,
बड़ी-बड़ी विपदाओं में जो कभी नहीं घबराते हैं।
'निशान्त' है कहता वीर मनुज ही जग में पूजे जाते हैं,
धीर वही होते जो जग में अपना नाम कमाते है॥

२६ सच्चा मित्र (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

जो है बचाता पाप से और पापकर्मों से सदा,
जो है लगाता मित्र को भी सत्यकार्यों में सदा।
आपत समय में भी खड़े रहते हमेशा साथ है,
सद्‌मित्र वो ही है जगत में नाम जिनका ख्यात है॥

ना है कोई रिश्ता न बन्धन प्रेम से ही वो बनें,
प्रेम के सर में लगा डुबकी रहे हैं वो सने।
दोस्ती दुनिया में उनकी स्नेह से विख्यात है,
सद्‌मित्र वो ही है जगत में नाम जिनका ख्यात है॥

चन्द्र के सम तापहारी मित्रों के वो दु:ख के,
जो है पिलाते घूँट अमृत से सदा ही सुख के।
श्रीकृष्ण और सुदामा सम जो करते सदा ही बात है,
सद्‌मित्र वो ही है जगत में नाम जिनका ख्यात है॥

जो है छुपाते गुप्त बातों को सदा निज मित्र की,
जो है प्रकट करते सदा ही वीरता निज मित्र की।
जो है सदा रहते यहाँ जैसे कुमुदिनी रात है,
सद्‌मित्र वो ही है जगत में नाम जिनका ख्यात है॥

साँसों के सम है जो जरूरी दोस्त ही है वो सदा,
जो मित्रता में जान भी कुर्बान करते सर्वदा।
उस प्रीत के दम पे सदा बनती ही सबकी बात है,
सद्‌मित्र वो ही है जगत में नाम जिनका ख्यात है॥

दुर्भिक्ष में शत्रुसंकटों में जो निभाते साथ हैं,
जो हर जगह रखते सदा निजमित्र की बात है।
हर समय में भी जिन दोस्तों का रहता हमेशा साथ है,
सद्‌मित्र वो ही है जगत में नाम जिनका ख्यात है॥

हे ईश अब हमको सदा सद्‌मित्र की ही प्राप्ति हो,
जिनके हृदय में वीरता और प्रेम की ही व्याप्ति हो।
हे प्रभु कर दे कृपा अब तू हमारा नाथ है,
सद्‌मित्र वो ही है जगत में नाम जिनका ख्यात है॥

२७. उपनिषद् (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

जिसने किया निर्माण भारत का किया कल्याण है,
अज्ञान के तम घोर में जो प्रकाश पुञ्जित बाण हैं।
पथ है प्रगति सभ्यता की श्रद्धा का आधार है,
ज्ञानों पे उपनिषदों के सारे टिक रहा संसार है॥

कितने रहस्यों का किया जग में यहाँ पे प्रचार है,
कितने ही तत्त्वों ज्ञानों का इसमें छुपा भण्डार है।
उद्धार करती संस्कृति का दिव्य अपरम्पार है,
ज्ञानों पे उपनिषदों के सारे टिक रहा संसार है॥

प्राचीन भारतवर्ष के आकाश की है तारिका,
जो है बनी निज तेज से इस देश की सुरसारिका।
तम का सदा विध्वंस करती ज्योति का विस्तार है,
ज्ञानों पे उपनिषदों के सारे टिक रहा संसार है॥

तेरी प्रभा से है प्रभावित सारी ये जगती हुई,
सन्देश आत्मा का दिया है तृप्त ये भूमि हुई।
दिग-दिगन्तित घोषणा है प्रेम का आधार है,
ज्ञानों पे उपनिषदों के सारे टिक रहा संसार है॥

प्राचीन भारतवर्ष के ऋषि-मुनियों का सन्देश है,
आत्मा अमर अविनाशी सबकी देह तो बस देश है।
ब्रह्म विद्या व्याप्त तुझमें आध्यात्म का भण्डार है,
ज्ञानों पे उपनिषदों के सारे टिक रहा संसार है॥

ज्ञान है विज्ञान है संसार का उपदेश है,
मोक्ष के जो मार्ग का करती सदा श्रीगणेश है।
आत्मा का ज्ञान व जग की तू ही प्राणाधार है,
ज्ञानों पे उपनिषदों के सारे टिक रहा संसार है॥

पाश्चत्य विद्वानों को मिलती आत्मिक शान्ति यहाँ,
तुझमें ही है आकृष्ट सारी देश की जनता यहाँ।
तेरे विचारों से प्रभावित कुलगुरु परिवार है,
ज्ञानों पे उपनिषदों के सारे टिक रहा संसार है॥

कितने ही विद्वानों की नजरों में सदा विख्यात है,
रोअर, मिशल, डूसन, ड्युपैरो नाम जिनके ख्यात हैं।
शोपन तथा रॉय की शान्ति का तू ही आधार है,
ज्ञानों पे उपनिषदों के सारे टिक रहा संसार है॥

२८. विद्या की महत्ता (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

विद्या है जो कल्याणकारी श्रेष्ठ पुरूषों की सदा,
जिससे न होती अवनति अब इस जगत् की सर्वदा।
जो यत्न करके सरस्वती का करता यहाँ आधान है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

विद्या सदा सर्वत्र उनको पूजनीय बनाती है,
कर्मों को उनके वाग्देवी महनीय भी बनाती है।
विद्या की प्राप्ति में जो नर न बनते कभी व्यवधान है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

देशों विदेशों में सदा बन्धु के सम विद्या खड़ी,
हर कार्यों में सहायता करती सदा है वो बड़ी।
उससे यहाँ नरपुंगवों का होता सदा सम्मान है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

जैसे पुनीत प्रभात है वैसी चमकती दिव्यता,
विद्या से ही होती सदा हर वस्तु की अवगम्यता।
अनुरागिणी विद्या ही जिनका श्रेष्ठ सा परिधान है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

उत्साह दे जो वीर पुरूषों को सदा ही युद्ध में,
जो वीरता से युक्त कविता लिखते दशा उद्‌बुद्ध में।
विद्या को जो न ग्रहण करते वो यहाँ नादान है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

पाण्डित्य है जिसमें भरा जो भक्त विद्या का सदा,
सारे ही दुर्गुण छोड़कर वो श्रेष्ठ जगति में बना।
जो सत्य विद्या ग्रहण करता समझे उसे भगवान् है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

जिनकी प्रभा के सामने अब तेज सबका मन्द है,
विद्या यहाँ भारतवर्ष में सर्वदा ही अखण्ड है।
इसलिए संसार में बुद्धि यहाँ की महान है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

२९. श्रावणी उपाकर्म (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

वेद शास्त्रों का पठन होता सदा है अब शुरू,
वेद विद्या है सिखाते आज से यें सब गुरू।
वेद ही सारे जगत् के प्राण है आधार है,
छाया हुआ इस देश में आज श्रावणी त्योहार है॥

चित्त को आह्लाद देती है सदा यें श्रावणी,
वेद वटुकों का सदा कल्याण करती श्रावणी।
वेद ही इस दु:ख सागर में मेरे पतवार है,
छाया हुआ इस देश में आज श्रावणी त्योहार है॥

निज आश्रमों को छोड़कर ग्रामों में आते है मुनि,
उनके मधु वचनों को सुनकर हो रहें सारे धनी।
प्रेम के सागर में डूबा आज ये संसार है,
छाया हुआ इस देश में आज श्रावणी त्योहार है॥

अपने समय को है बिताते ज्ञान को पाते सदा,
निज जन्म को श्रेष्ठ करते वेदपाठन में सदा।
वेद का पढ़ना पढ़ाना वेद का व्यवहार है,
छाया हुआ इस देश में आज श्रावणी त्योहार है॥

वेदपाठी विप्रगण का है प्रिय यह पर्व भी,
देवकर्मों में सदा तत्पर रहें यह कर्म भी।
वेद का स्वाध्याय ही उनका सदा आचार है,
छाया हुआ इस देश में आज श्रावणी त्योहार है॥

रक्षा का बन्धन है बंधा सब भाईयों के हाथ में,
ताकी सुरक्षित लाज बहनों की बचें सब साथ में।
रक्षार्थ राखी के धर्म से व्याप्त ये संसार है,
छाया हुआ इस देश में आज श्रावणी त्योहार है॥

ज्ञानदाता ब्रह्म है रक्षा है करता क्षत्रिय,
शूद्र का है कर्म सेवा धन से भरता वैश्य यें।
वर्णाश्रमों की रीति ही संसार का आधार है,
छाया हुआ इस देश में आज श्रावणी त्योहार है॥

३०. श्रीकृष्णजन्माष्टमी (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

दिव्यता तेरी रहे तेरा ही सबको ध्यान भी,
आराध्य तू मेरा सदा तू ही मेरा अभिमान भी।
सद्‌गुणों को हम सदा धारें ये भारत है कहे,
श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी का पर्व भारत में रहे॥

तू अलौकिक था महाभारत में तेरी कीर्ति,
भागवत् में है लिखी तेरी सदा अपकीर्ति।
आराध्य मेरा देव तू मेरा ये तन मन है कहे,

श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी का पर्व भारत में रहे॥

क्षत्रिय वर्णों में तू ही तो शक्तिशाली धीर था,
तेरी भुजा के शौर्य से फीका जलद गम्भीर था।
तेरे पराक्रम के ही दम पे पार्थ थे रण में सजे,
श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी का पर्व भारत में रहे॥

द्वारिका निर्माणकर्ता और विशेषज्ञ था,
तेरी प्रभा के सामने सारा जगत् भी अज्ञ था।
विद्या-विलासी वीर भी था श्रेष्ठता से तू सजे,
श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी का पर्व भारत में रहे॥

श्रेष्ठ थे श्रीकृष्ण मन से माननीय वीर थे,
राजसूय यज्ञ में वो श्रेष्ठ थे वो धीर थे।
भारत तथा लोगों के हित में दु:ख भी तूने सहे,
श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी का पर्व भारत में रहे॥

आचरण के योग्य तेरा श्रेष्ठ ही व्यवहार था,
तेरी कृपा की मांग करता ये सकल संसार था।
तेरी दिशा का अनुसरण सारे ही जन हैं कर रहे,
श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी का पर्व भारत में रहे॥

अपराजेय प्रेममय नीतिज्ञ था धर्मज्ञ था,
तू दयामय और निर्भय योगी तू वेदज्ञ था।
तेरी दया हम पर रहे जब तक ये जीवन जग रहे,
श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी का पर्व भारत में रहे॥

अनुपम अनोखी दिव्य गीता भी तेरी ही देन है,
जिसकी प्रभा से व्याप्त मेरा धर्म ये अक्षुण्ण है।
श्रद्धा का जो उद्भव कराती फैले सदा वो हर जगह,
श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी का पर्व भारत में रहे॥

अवनत ये आर्य जाति का प्राण तू और राम है,
हम भारती पुत्रों के मन का तू सदा ही धाम है।
तेरे चरण चिह्नों पे चले हम कर कृपा हैं कह रहें,

तू तत्त्वदर्शी तत्त्ववेत्ता सूर्यसम विख्यात है,
तू आस है भारतवर्ष की विश्व को भी ज्ञात है।
मेदिनीतल में सदा गूंजित तेरी वाणी रहे,
श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी का पर्व भारत में रहे॥

३१. पञ्चमहायज्ञ (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

देवों के सम वो देव ऋषि जिनसे हुआ ये ज्ञान है,
भूतों को सुख देता है अग्निहोत्र का ये विधान है।
उसके ही दम पे दु:ख का अब हो रहा निस्तार है,
पाँचों ही यज्ञों पे टिका सारा यहाँ संसार है॥

दोनों समय में ब्रह्म का ही ध्यान संध्या है सदा,
आत्मा की उन्नति के लिए है विधान इसका सर्वदा।
इसके बिना परिवार का होता नहीं कल्याण है,
पाँचों ही यज्ञों पे टिका सारा यहाँ संसार है॥

दूसरा है देवयज्ञ कल्याण दुनिया का करे,
इससे पर्यावरण सारा दिव्यगन्धों से भरे।
सर्वदेवों का है आनन सृष्टि का आधार है,
पाँचों ही यज्ञों पे टिका सारा यहाँ संसार है॥

माता-पिता के सुख तथा सेवाव्रती भी हम बनें,
आदेश है ये पितृयज्ञ का श्रेष्ठ भावों से सनें।
अक्षरश: अमृतवचन उपदेश और आचार है,
पाँचों ही यज्ञों पे टिका सारा यहाँ संसार है॥

जीवों के वर्धन के लिए यज्ञ है कहा बलिवैश्व को,
निवृत्त क्षुधा से तुम करो संसार के हर जीव को।
प्रेम से पालो सदा प्रीति का भी विस्तार हो,
पाँचों ही यज्ञों पे टिका सारा यहाँ संसार है॥

विद्वान अतिथि की भी सेवा यज्ञ है इस देश में,
देवों के सम होता अतिथि दिव्यता उपदेश में।
जो धार्मिक छल से रहित प्रीति भरा व्यवहार है,
पाँचों ही यज्ञों पे टिका सारा यहाँ संसार है॥

हे दयामय! देश में अब शान्ति का विस्तार हो,
शृंखला यज्ञों की हो उनका यहाँ भी प्रचार हो।
शान्ति प्रदाता है सदा भूलोक का आधार हो,
पाँचों ही यज्ञों पे टिका सारा यहाँ संसार है॥

३२. प्रात: जागरण मन्त्र (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

प्रात: वेला में जो दाता शक्ति का परमार्थ का,
पुष्टिकर्ता रूद्र है इस सृष्टि का पुरूषार्थ का।
सर्वरोगों का जो नाशक दिव्यता उत्पन्न करें,
हे ईश तेरी प्रार्थना हम ब्रह्मवेला में करें॥

जयशील ऐश्वर्य का दाता धारता ब्रह्माण्ड को,
दुष्ट लोगों को दिलाता वो ही ईश्वर दण्ड को।
उस भगम् भजनीय ईश्वर का सदा सेवन करें,
हे ईश तेरी प्रार्थना हम ब्रह्मवेला में करें॥

भजनीय ईश्वर है पिता सारी ही सृष्टि का सदा,
धन तथा वैभव को जो देता नरों को सर्वदा।
तेरी कृपा पाकर सदा इस वीरपथ पर हम चलें,
हे ईश तेरी प्रार्थना हम ब्रह्मवेला में करें॥

तेरी कृपा पुरूषार्थ से धारण करें हम धीरता,
उत्कर्ष हममें हो भरा पावें सभी हम शूरता।
विद्वत्वरों के सम सदा बुद्धि को हम धारण करें,
हे ईश तेरी प्रार्थना हम ब्रह्मवेला में करें॥

हे सकल ऐश्वर्य दाता आपसे ही प्यार हो,
तन मन तथा धन से सदा संसार का उपकार हों।
पूजनीय प्रभों हमारी कामना को पूर्ण करें,
हे ईश तेरी प्रार्थना हम ब्रह्मवेला में करें॥

हे दयामय आपका हमको सदा आधार हों,
इस जगत् में शान्ति का सर्वत्र ही विस्तार हों।
तेरी शरण में हम जियें तेरी शरण में हम मरें,
हे ईश तेरी प्रार्थना हम ब्रह्मवेला में करें॥

आपकी भक्ति से उन्नत कुलगुरू परिवार हो,
ईर्ष्या झगड़े है जो उनका भी अब निस्तार हो।
तेरे उपासक हम बनें और तेजता धारण करें,
हे ईश तेरी प्रार्थना हम ब्रह्मवेला में करें॥

३३. शिवसंकल्प सूक्त (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

जो जागते सोते हुए भी दूर-दूर तक जाता है,
जो है प्रकाशक ज्ञान का भी बुद्धियों का दाता है।
कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ पाती न है ये श्रेष्ठता,
भगवान् शिवसंकल्प से मन में हो पूरित दिव्यता॥

धीरता और वीरता के भाव को धारण करें,
देवपूजा दान को भी जो सदा प्रारम्भ करें।
जो पूजनीय अपूर्व है जिसमें भरी है वीरता,
भगवान् शिवसंकल्प से मन में हो पूरित दिव्यता॥

जो चेतना और धैर्य का दाता सदा ही युद्ध में,
अन्त:करण में है रमा वो मन दशा उद्बुद्ध में।
जिसके बिना मानव न पा सकते जरा भी ओजता,
भगवान् शिवसंकल्प से मन में हो पूरित दिव्यता॥

भूत और भविष्य का जिससे ही होता ज्ञान है,
जिसके बिना भुवनम् समय तम से ही पूरितमान है।
निज व्याप्त शक्ति से जो भरता इन्द्रियों में विस्तृता,
भगवान् शिवसंकल्प से मन में हो पूरित दिव्यता॥

जिस मन के भीतर वेदशास्त्रों का छिपा है ज्ञान भी,
जिसके बिना संसार में होता है न कल्याण भी।
जीवन निरर्थक हो सदा यदि हो भरी पाखण्डता,
भगवान् शिवसंकल्प से मन में हो पूरित दिव्यता॥

जो इन्द्रिय अश्वों के वल्गु के ही जैसा है सदा,
वश में रखता नर को वो निजशौर्य से ही सर्वदा।
जो शीघ्रगामी सर्वव्यापक जिसमें है सुन्दर शीलता,
भगवान् शिवसंकल्प से मन में हो पूरित दिव्यता॥

हे दयामय कर दया तू ही दयालु दिव्य है,
संसार के श्रेष्ठ नर का तू सदा ही सेव्य है।
तेरी कृपा से हो भरी संसार में अब श्रेष्ठता,
भगवान् शिवसंकल्प से मन में हो पूरित दिव्यता॥

३४. ईश्वर (कविता) :: छन्द - विधाता मिलिन्द पाद

कि कर्ता जो है सृष्टि का जिसे हम ईश है कहते,
कि सुख का दान दाता वो जिसे पा मस्त है रहतें।
कि करता कष्ट को भी नष्ट परम ऐश्वर्यशाली वो,
कि जग के ज्ञान का दाता कि जिसके प्रेम में बहतें॥

कि सूर्यों का प्रकाशक है व्योम के जैसे व्यापक तू,
कि सारे दुर्गुणों को दूर करता सर्वव्यापक तू।
कि आदिकाल तू ही है और अन्तिम समय भी तू,
कि तू ही एक विधाता है कि साधन साध्य है तू ही॥

हे मेरे ईश तेरे गीत सभी ऋषि लोग दुहराते,
बनो तुम मोक्ष के साधन सभी हम लोग कहलाते।
कि मुझको मौत भी आये मगर तुझको न भूलूँ मैं,
निश दिन मै तुझे पाऊँ भक्त की पदवी पाके॥

कि जलता प्रीत से तेरी है जीवन ज्योति का दीपक,
कि तेरी माया से पावन है मेरी कविता का शीर्षक।
कि मेरे मन में है आया कि मुझको तू ही भाया,
कि भक्ति भाव से पूरित रहे से देश का दीपक॥

ये धरती है तेरी भगवन् कि धर्ता तू सदा इसका,
कि तेरे इन गुणों का गान सारा विश्व है करता।
कि तेरी ज्योति से जगमग है सूरज चाँद और तारे,
कि मरते दम तलक भी आज रगों में नाम है तेरा॥

सबके दिल में तू रहता रगों व्याप्त है तू ही,
ये मानव देह रचना है जगत का कार्य है तू ही।
कि दुनिया को सजाया है न तेरा भेद पाया है,
है सबका बाप तू ही और सबकी माँ तू ही है॥

कि तूझसे नाता मेरा है कि मेरा सब कुछ तू ही,
कि कर्ता धर्ता है तू ही कि सबका प्रेमपालक तू।
कि मेरी नाव अब डूबी दु:ख के सागर में भगवन्,
कि तेरे दर में खुशियाँ और उनका दाता है तू ही॥

कि मेरे ईश हे जगदीश मेरे प्राणदाता हो,
कि रक्षा तुम करो भगवन मेरे कष्टहर्ता हो।
कि ये वरदान दो मुझको हे मेरे अन्तर्यामी जी,
कि निशदिन मैं तुम्हें ध्याऊँ और निश दिन तुम्हें पाऊँ॥

३५. मेरी माँ (कविता) :: छन्द - विधाता मिलिन्द पाद

कि जैसे डूबता सूरज तृप्त करता है जेठन में,
कि जैसे बूँद बारिश की शुद्धता देती सावन में।
कि वैसे बालकों का ध्यान रखती माँ जिसे कहते,
कि मन को याद आती माँ हवन की वेला पावन में॥

कि जब मैं था रोम जितना मुझे था पाला जब तूने,
कि रखा ध्यान माँ मेरा नींद को त्यागा जब तूने।
कि तुझसे प्रीत है मेरी कि तुझसे प्रेमबन्धन है,
कि तुझसे चाह मेरी है मुझे जब चाहा था तूने॥

कि भटका दर्द से टूटा हुआ जब गोद में आता,
कि पाकर थपकियाँ लोरी शरण में नींद की जाता।
कि मेरी साँस है तेरी और मेरी रुह तेरी है,
कि मुझको अब तू ही भाती कि तेरा ध्यान है आता॥

कि ठण्डा कौर रोटी का खिलाती जो सदा करके,
जो मेरे दर्द दु:खों को भुलाती जो सदा सहके।
कि मेरे श्रेष्ठ जीवन का प्रमुख आधार माँ मेरी,
कि अपनी माँ से खुश न है कोई दूर रहकर के॥

कि बचपन में था मेरी माँ कि तेरी अंगुलियाँ पकड़ी,
कि जब जब भी डरा था तो मैंने तेरी टाँग थी जकड़ी।
जो बच्चों का सहारा है जो है ममता की मूरत भी,
कि तेरे दर पे आकर के है मिलती प्यारी सी झिड़की॥

कि राहत वो दिलों की है कि वो है चूरन कर गोली,
कि जग के दर्द को सहकर रही है वो बनी भोली।
कि पृथ्वी सी जो भारी है कि गंगा सी पावन है,
कि बच्चों के लिए है वो नीदों की प्यारी सी लोरी॥

कि लोरी होठों पे उसके दिलों में प्रेम का सागर,
कि जैसे मिल गयी है आज किसी पनहारिन को गागर।
कि ममता की दुआओं का कभी तू खून मत करना,
कि माँ की बद्दुआ से ही आज मिलता है भवसागर॥

कि माँ मुझे दो वर मैं रगड़ू शीश अम्बर का,
कि पाकर उच्चता को भी बनूँ श्याम सुंदर-सा।
कि मेरी माँ मुझे तो बस दिली ख्वाहिश है इतनी-सी,
कि चढ़ता मैं रहूँ सीढ़ी बड़े तव नाम सुंदर-सा॥

३६. मेरे आचार्य (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

महाराष्ट्र भूमि वीरता से है सुशोभित जो सदा,
जो राष्ट्रहित वीरों को जनती धर्म के हित सर्वदा।
उस वीरभूमि को अलंकृत करता तुम्हारा नाम है,
धन-धन धनञ्जय आज तुमको कोटि-कोटि प्रणाम है॥

जो शिष्य स्वामी सम यति का नाम जिनका ख्यात है,
फैली हुई है गुरुकुलों की श्रृंखला विख्यात है।
उन यतिवरों के कर्मकौशल-सा प्रकाशित नाम है,
धन-धन धनञ्जय आज तुमको कोटि-कोटि प्रणाम है॥

जैसे गुँजाता कर्ण को है घोष वैदिक धर्म का,
वैसे चमकता नाम है तेरे अमिट उत्कर्ष का।
जग में कुमुदिनी ज्योत्स्ना के सम प्रकाशित काम है,
धन-धन धनञ्जय आज तुमको कोटि-कोटि प्रणाम है॥

गुरु के विचारों का प्रचारक था सदा ही वो बना,
की दूनघाटी में उन्होंने आर्ष-गुरुकुल स्थापना।
जिसके अलौकिक तेज से सारा प्रकाशित ग्राम है,
धन-धन धनञ्जय आज तुमको कोटि-कोटि प्रणाम है॥

जिसके धुरन्धर बालकों से ये प्रकाशित देश है,
जो देश के हित एशियन खेलों में रखते टेक हैं।
जो धीरता और वीरता के प्रौढ़तम पैगाम हैं,
धन-धन धनञ्जय आज तुमको कोटि-कोटि प्रणाम है॥

जिसने सहा दु:ख दर्द को न धर्म से था जो हटा,
जिसने लगाया पौध को और माली के सम जो डटा।
जो तात के सम वटुवरों का खूब रखता ध्यान है,
धन-धन धनञ्जय आज तुमको कोटि-कोटि प्रणाम है॥

है आज पावन जन्मदिन और आज हैं हम सब खड़े,
करते हैं हम ये प्रार्थना कि आपका अब यश बढ़े।
तुमसे हमारी है सुबह तुमसे हमारी शाम है,
धन-धन धनञ्जय आज तुमको कोटि-कोटि प्रणाम है॥

३७. मेरे पिता (कविता) :: छन्द - विधाता मिलिन्द पाद

कि जैसे छाँव हो बादल की कि जैसे उगता सूरज,
कि जैसे नीर फ्रीजर का कि जैसे प्यारा है नीरज।
कि वैसे व्याप्त है वो बालकों मे खून के जैसे,
कि बच्चों के पालन में जों है रखता ही सदा धीरज॥

कि माँ और देश के ऊपर जो लाखों पद्य है लिखते,
मगर पालक पिता के आज बहुत कम लफ्ज है मिलते।
कि उसके रूप की तुलना आज भी व्योम से देते,
कि सबका वो ही पालक है जिसे बाप है कहते॥

कि लड़ता है पिता निशदिन पालन करने को बच्चों का,
कि है पिघला हुआ वो मोम, मगर वो सख्त है दिखता।
कि ममता भी उसी में है मगर वो शान्त है रहता,
कि सारे दु:ख दर्दों में सदा वो हँसा सा दिखता॥

कि नन्हा सा परिंदा लाल खुला आकाश वो सबका,
कि चाहत है वो बालक की कि धर्ता वो सदा सबका।
कि साँसो की थमी है डोर उसी बापू के दम पे ही,
कि घर के सुख दु:खों की खुली नैय्या है वो सबका॥

कि माँ की गोद सूनी हो अगर पापा नही होंगे,
किर सबकी देहली रोये अगर पापा नही होंगे।
कि बच्चों से जरा पूछो न जिनका सहारा कोई,
कि दु:ख दर्दों मे होगें वो अगर पापा नहीं होंगे॥

कि माँ का भाग्य वो है कि कुम कुम चूड़ियाँ वो ही,
कि सबका दाता है वो ही कि सबका प्राणदाता वो।
पिता है द्यु से ऊँचा युधिष्ठिर ने कहा देखो,
पिता परिवार की नैय्या और केवट वो सदा देखो॥

हे मेरे ईश प्रभु जगदीश कि मुझमे पितृभक्ति दो,
कि अनुव्रत मैं बना उनका कि मुझमें देव शक्ति दो।
कि उनकी बात का पालन करूँ हे ईश निशदिन मैं,
कि सेवा मैं करुँ उनकी कि ऐसी भक्ति भगवन् दो॥

कि राहों मे सदा उनके मैं सींचू प्रेम का सागर,
कि अपनी नित्य सेवा से मैं भर दूँ प्रीत का गागर।
कि उनकी कामना को मैं सदा पूरा करुँ भगवन्,
कि उनकी भावना का भाव सदा पूरित रहें भगवन्॥

३८. मंगलकामना (कविता) :: छन्द – हरिगीतिका

प्रेम से मिल करके गायें गीत हम परमेश के,
चमके सदा दुनिया में हम बनकर के समदेवेश के।
हम भारतीपुत्रों के जीवन में सुगन्धित श्वास हो,
हे ईश! जीवन में हमारे शुद्धता का वास हो॥

सब मोह माया छल कपट को दूर रखें हम सदा,
भरपूर उत्साह से रहें जिससे बढ़े धन–सम्पदा।
उस प्रभु के गीत गाएं एक ही बस आस को,
हे ईश! जीवन में हमारे शुद्धता का वास हो॥

सब जीवधारी जन्तुओं का ध्यान रखें आप ही,
सबका करें कल्याण ईश्वर हम सदा फिर आप ही।
सबके लिए शाश्वत सदा हमदर्द–सा आभास हो,
हे ईश! जीवन में हमारे शुद्धता का वास हो॥

विद्याविलासी वाक् हो हम शारदा के पुत्र हों,
निजबुद्धि बल के स्वामी हम अब ना कहीं संत्रस्त हों।
हम भारती पुत्रों के मन में शारदा का वास हो,
हे ईश! जीवन में हमारे शुद्धता का वास हो॥

विद्या–कला कौशल्य में भी व्याप्त ये अनुराग हो,
उत्साह का संचार हो आलस्य का अब त्याग हो।
सब के हृदय के मण्डलों में देशप्रेम अपार हो,
हे ईश! जीवन में हमारे शुद्धता का वास हो॥

व्यापार से पुरुषार्थ से और त्याग से न हम डरें,
निर्भीक होकर के सदा हम आज कर्मों को करें।
सुकर्म के कर्ता सदा हममें भरा मधुमास हो,
हे ईश! जीवन में हमारे शुद्धता का वास हो॥

देश को अपने लहू से हम सदा सींचें सभी,
निजधर्म–जाति को सदा ना हीन होने दें कभी।
दिव्यता पूरित रहें मधु लालिमा का वास हो,
हे ईश! जीवन में हमारे शुद्धता का वास हो॥

३९. प्रकृति एवं ऋतु वर्णन (कविता)

वसन्त–

कोमल कली कुसुमों का कर्ता, कोयल कूजित कुंजन का,
कल–कल कोमल कुंजों का कुन्दकली कुसुमाकर का।
श्वेतांग सरोवर सरसिज से सुरभित सूर्य सुगन्धि से,
ऋतुराज रिपु ऋषिपुत्रों का निजमित्र मदन के बाणों से॥

ग्रीष्म–

गिर गई ग्रीष्म गिरी ग्रामों में बेहाल बेचारा बालक वृन्द,
गुरु गंगा सूक्ष्म सरोवर–सी अब ग्रीष्म से पीड़ित पक्षीवृन्द।
सूर्य रश्मियां सुमनों से सर से जल ले जाती है,
गरिमा ग्रीष्म की गुरुकुल के वटुकों का श्वेद बहाती है॥

वर्षा–

वन की बनी बेजोड़ व्याप्ति बारिश से अब व्याप्त हुई,
केका कलरव कमनीय कला कोमल कान्ति–सी कलित हुई।
नद–नद नदी नहरों से नालों नभ से है टूट पड़ी,
गद–गद करते गदेरों से अनुपम जलराशि फूट पड़ी॥

शरद्–

शान्त श्रान्त सरोवर है समुद्र सुधाकर शान्ति वाला,
शयनागार सुमन से सुन्दर सुरभियुक्त सुगन्धि वाला।
वीर वृन्द व्यापक बाणों से जयरव जयध्वनि करता है,
शिशिर सुमित्र शशांक से सुन्दर शोभन कुमुदिनी करता है॥

हेमन्त-

हिमालय हिम के हारों से हीरे-सा हर्षित होता है,
गन्धर्वगणों के गानों से सुरभित समीर भी होता है।
चारू-चन्द्र की चंचल किरणें न दृष्टिपथों में आती हैं,
जाड़ा जहाँ में जर्जर कर शव-सा सुन्न कर देता है॥

शिशिर-

पके पत्र पेड़ पाकड़ के झर-झर करके झरते हैं,
झांक के झंझा के झोंकों में झंकृत झुण्ड से सड़ते है।
क्यारी-क्यारी क्लान्त पड़ी है ऋतुराज की प्रतीक्षा में,
केली काली पड़ी हुई है कोमल कली की इच्छा में॥

४०. गौ-माता (कविता) :: छन्द - कवित्त

गाय हमारी माता है, ये पूरा भारत गाता है।
गाय हमारी माता है, ये कहना सबको आता है॥
हक मांगना हो जब इनका, साथ कोई न आता है-२॥

कट रही वो बीच बाजार, बिक रही वो रोज हजार,
गौ-माता की यही पुकार बन्द करो ये अत्याचार।
एक ही धर्म है एक ही नारा गौ-माता को देना सहारा,
गौ-माता की रक्षा करना ये पावन अब लक्ष्य हमारा॥
गाय हमारी माता है,..............................॥

सुन लो तुम हे भारतवासी! जरा शर्म ना तुमको आती,
गाय को तुम कहते माता लाज लुटाते लाज न आती।
माँ के घातक बने हुए हो लस्सी, दही न तुमको भाती,
इसकी हत्या के कारण ही फटती है वसुधा की छाती॥
गाय हमारी माता है,..............................॥

जिसने तुमको दूध पिलाया अपना पूत बनाया है,
पूत कपूत बना तू उसको वधशाला भिजवाया है।
उसके खूँ से रंगा हुआ ये पैसा तूने कमाया है,
इस दुष्कर्म का फल भी मानव तूने जल्दी पाया है॥
गाय हमारी माता है,..............................॥

अब हर भारतवासी आयेगा हर कोने में रव छायेगा,
जब हुँकार लगायेगा वो सारा देश हिलायेगा।
प्रभु से करते एक प्रार्थना और हमें बस एक ही आशा,
शीघ्र बने तू इस भारत की राष्ट्रमाता-राष्ट्रमाता॥

४१. विद्या की महत्ता (कविता) :: छन्द - हरिगीतिका

विद्या है जो कल्याणकारी श्रेष्ठ पुरूषों की सदा,
जिससे न होती अवनति अब इस जगत् की सर्वदा।
जो यत्न करके सरस्वती का करता यहाँ आधान है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

विद्या सदा सर्वत्र उनको पूजनीय बनाती है,
कर्मों को उनके वाग्देवी महनीय भी बनाती है।
विद्या की प्राप्ति में जो नर न बनते कभी व्यवधान है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

देशों विदेशों में सदा बन्धु के सम विद्या खड़ी,
हर कार्यों में सहायता करती सदा है वो बड़ी।
उससे यहाँ नरपुंगवों का होता सदा सम्मान है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

जैसे पुनीत प्रभात है वैसी चमकती दिव्यता,
विद्या से ही होती सदा हर वस्तु की अवगम्यता।
अनुरागिणी विद्या ही जिनका श्रेष्ठ सा परिधान है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

उत्साह दे जो वीर पुरूषों को सदा ही युद्ध में,
जो वीरता से युक्त कविता लिखते दशा उद्बुद्ध में।
विद्या को जो न ग्रहण करते वो यहाँ नादान है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

पाण्डित्य है जिसमें भरा जो भक्त विद्या का सदा,
सारे ही दुर्गुण छोड़कर वो श्रेष्ठ जगति में बना।
जो सत्य विद्या ग्रहण करता समझे उसे भगवान् है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

जिनकी प्रभा के सामने अब तेज सबका मन्द है,
विद्या यहाँ भारतवर्ष में सर्वदा ही अखण्ड है।
इसलिए संसार में बुद्धि यहाँ की महान है,
विद्याविलासी व्यक्ति का होता सदा कल्याण है॥

'शिक्षा' जिस से विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उस को शिक्षा कहते हैं। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

जीव जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

गुरुकुल परम्परा के पोषक एवं महर्षि-मिशन के मिशनरियों को

विनम्र श्रद्धांजलि

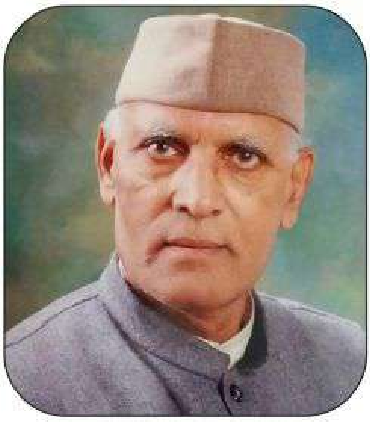
पण्डित सत्यपाल पथिक

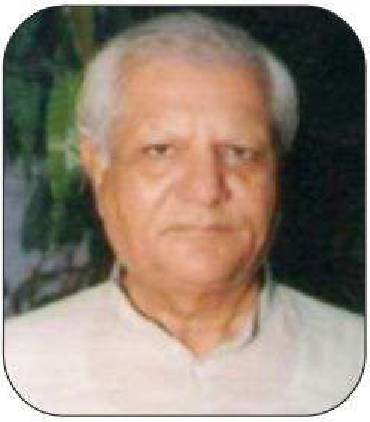
श्री सत्यव्रत सामवेदी

डॉ. विनोद चन्द्र विद्यालंकार

आचार्य डॉ. नागेन्द्र कुमार

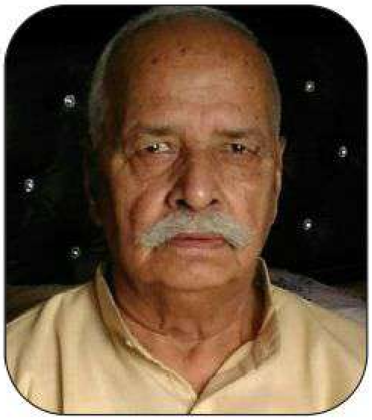
श्री ईश्वर दयालु आर्य

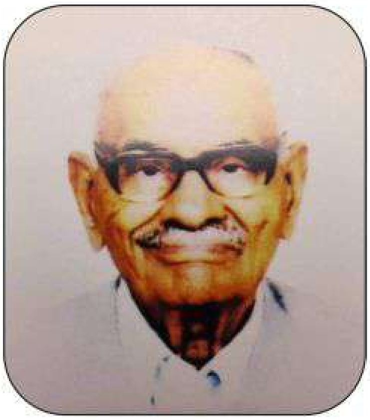
श्री गुरुदत्त तिवारी

माता रविला गुप्ता

श्री आत्मा राम आर्य

पंजीयन संख्या : UTTBIL/2008/23546 डाक पंजीयन नं. : UA/DO/DDN/397/2019-2021

पतंजलि®
प्रकृति का आशीर्वाद

करोड़ों देशवासियों का
भरोसेमन्द हर्बल टूथपेस्ट
दन्त कान्ति

दन्त कान्ति के लाभ

✓ लौंग, बबूल, नीम, अकरकरा, तोमर, बकुल आदि बेशकीमती जड़ी बूटियों से निर्मित दन्त कान्ति, ताकि आपके दाँतों को मिले लंबी उम्र व असरदार प्राकृतिक सुरक्षा।

✓ पायरिया, मसूड़ों की सूजन, दर्द व खून आना, सेंसिटिविटी, दुर्गन्ध एवं दाँतों के पीलेपन आदि को दूर करे।

✓ कीटाणुओं से लम्बे समय तक बचाकर दे दाँतों को प्राकृतिक सुरक्षा कवच।

पूरी दुनिया अब नैचुरल प्रोडक्ट्स को अपना रही है
आप भी पतंजलि के नैचुरल प्रोडक्ट्स अपनाइए और प्रकृति का आशीर्वाद पाइए

आवाहन– राष्ट्र के जागरुक व्यापारियों व ग्राहकों से हम विनम्र आवाहन करते हैं कि करोड़ों देश भक्त भारतीयों की तरह, आप भी पतंजलि के उत्पादों को अपनी दुकानों व दिलों में सर्वोच्च प्राथमिकता देकर जन–जन तक पहुँचाएं और देश की सेवा व समृद्धि में योगदान दें। जिससे महात्मा गाँधी, भगत सिंह व राम प्रसाद बिस्मिल आदि सभी महापुरुषों के स्वदेशी अपनाने के सपने को मिलकर साकार कर सकें।

पतंजलि आयुर्वेद के लगभग 500 उत्पाद हैं, ये शुद्ध खाद्य उत्पाद व हर्बल सौन्दर्य उत्पाद हमारे पतंजलि स्टोर्स के साथ ओपन मार्केट की दुकानों पर भी उपलब्ध हैं।

सेवा में,
....
....
....
....
....

डाक टिकट

मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक एवं स्वामी : आचार्य धनञ्जय द्वारा श्रीमद्दयानन्द आर्ष-ज्योतिर्मठ- गुरुकुल, दून वाटिका-२ पौंधा, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित एवं जयरति प्रिन्टिंग प्रेस, ३५ कांवली रोड, देहरादून से मुद्रित।
सम्पर्क सूत्र-9411106104, arsh.jyoti@yahoo.in

मुद्रण तिथि - ३ दिसम्बर २०२०। डाक प्रेषण तिथि - ८ दिसम्बर २०२०। कुल पृष्ठ संख्या-४८।